मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

मुसलमान रद्दे अमल की मानसिकता के शिकार न हों!

“बिलाशुब्हा इस वक़्त सारी दुनिया के मुसलमान और ख़ास तौर पर दीनी तालीम व हिदायत पर सख़्ती के साथा चलने वाले लोग हर जगह और हर मक़ाम पर इस दुश्मनी भरी सियासत की वजह से जो इस्लाम विरोधी हरकतों के ज़रिये परवान चढ़ाई जा रही हैं, तरह-तरह के मसलों में गिरफ़्तार हैं। फिर भी इसका मतलब यह हरगिज़ नहीं है कि मुसलमान रद्दे अमल की नफ़्सियात (प्रतिक्रियावादी मनोवृत्ति) का शिकार हो जाएं और वह भी अदावतों और नफ़रतों का जवाब अदावत और नफ़रत ही से देने लगें। रद्दे-अमल की यह मानसिकता उनके अनुरूप बिल्कुल नहीं है। उनका काम तो यह है कि नसीहत और ख़ैरख़्वाही व अल्लाह की तरफ़ बुलाने के अमल को जारी रखें। इस्लामी तालीम और हुक्म को हिकमत व मस्लहत और संतुलित रूप में लोगों के सामने पेश करते रहें कि उनके इस्लाम को हर हाल में यही और बस यही हुक्म

हज़रत मौलाना सैय्यद मुहम्मद वाज़ेह रशीद हसनी नदवी (रह०)

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, तकिया कलां, रायबरेली

Oct
2025

वह दिन कि जिसका वादा है

"यह दिन ज़रूर आने वाला है जब सिर्फ़ इल्म–ए–हक़ ही की सल्तनत होगी। जाहिलों की जिहालत, मुतअस्सिबों का तअस्सुब, वह्म–परस्तों के औहाम, मुद्दियान–ए–इल्म–ओ–बातिल के ज़ुनून' सब नेस्त–ओ–नाबूद हो जाएँगे। वह दिन ज़रूर आने वाला है जब एक अक़्ल–ए–सादिक़ व हक़ीक़त–अंदेश ही की हुकूमत होगी। अक़्ल–ए–इंसानी तमाम बंदिशों से आज़ाद हो जाएगी। उसका पुर–जलाल तख़्त इल्म–ए–हक़ की रौशनी में बिछेगा। उस दिन हक़, बातिल से अलग हो जाएगा। तय्यिब और ख़बीस में शुब्हा बाक़ी न रहेगा। सिर्फ़ वही तालीम इंसानियत के सामने आने की जुर्रत कर सकेगी जो कारसाज़–ए–फ़ितरत की हक़ीक़ी और बे–मैल तालीम होगी।

हक़–ओ–बातिल का फ़ैसला न सलीबों की तलवारें कर सकीं, न मुजाहिदीन की शम्शीरें; हक़–ओ–बातिल का फ़ैसला न पादरियों के कारख़ानों से हो सकता है, न पेशवायान–ए–दीन के ख़ुद–साख़्ता दावों और मरऊब–कुन दलीलों से। नाम–निहाद इल्म–ओ–दानिश की रोशन–ख़्यालियाँ और मुक़द्दस जुमूद–ओ–तक़लीद की रासिख़–उल–एतिक़ादियाँ' ये तमाम चीज़ें कुहरे के नुमूद से ज़्यादा नहीं हैं। जो इल्म–ए–हक़ के नूर के दमकते ही फ़ना हो जाएँगी; बल्कि यह महज़ एक ग़ौग़ा है जो इल्म–ए–हक़ का महींब नारा बुलंद होते ही सुकून–ए–मौत में तब्दील हो जाएगा। उस वक़्त अक़्ल–ए–सादिक़ का सुल्तान–ए–अज़ीम नूरानी ताज–ए–इल्म सर पर रखे हुर्रियत के परचम उड़ाता इजलाल–ए–रब्बानी के साथ नमूदार होगा और जहल–ओ–ज़ुल्मत के तमाम बुत सर–नगूँ हो जाएँगे।

कलिमा "ला इलाहा इल्लल्लाह" की कामिल फ़तहमंदी में सिर्फ़ इतनी ही देर बाक़ी है कि इल्म–ओ–अक़्ल के बंधन टूटें और यह दोनों जबरूती क़ुव्वतें जहल–ओ–ग़ुरूर की चट्टानें पाश–पाश करके फेंक दें।

हाँ! सिर्फ़ इतनी ही देर बाक़ी है, क्योंकि दुनिया की आँखों पर इस वक़्त तक जहल–ओ–वहम के कसीफ़ परदे पड़े हुए हैं।

हाँ! वो मुबारक दिन ज़रूर आने वाला है जब तन्हा इल्म–ओ–अक़्ल–ए–हक़ की फ़रमाँरवाई हो जाएगी, इल्म–ओ–अक़्ल–ए–हक़ की आवाज़ के सिवा कोई आवाज़ सुनाई न देगी। उस दिन, सिर्फ़ उसी दिन, ख़ुदा हक़–ओ–बातिल में फ़ैसला करेगा, तय्यिब को ख़बीस से अलग कर देगा, सच्चाई का बोल–बाला होगा, मुनकिरों का ख़ातिमा हो जाएगा। उस दिन कलिमा "ला इलाहा इल्लल्लाह" ज़मीन की ख़ुश्कियों और तरीयों पर सर–बुलंद चलेगा, फ़तेह का निशान इसके आगे होगा। एक तरफ़ इसका अर्श इल्म के कांधे पर होगा, दूसरी तरफ़ अक़्ल दोश–बर्दार होगी। उस दिन सारा जहान ब–बांग–दहल शहादत देगा: ला इलाहा इल्लल्लाह!

हर अज़मत ज़ाइल हो जाने वाली है, हर अज़ीम हलाकत की तारीकियों में गुम हो जाने वाला है, मगर कलिमा "ला इलाहा इल्लल्लाह" हमेशा बाक़ी रहने वाला है। वही इस जहान–ए–फ़ानी की तन्हा अब्दियत है। वो न तो कभी ज़ाइल होगा, न कभी हलाक होगा। वो एक ऐसी अज़मत है जिसकी बुनियाद हक़ है, लिहाज़ा उसमें हक़ की क़ुव्वत और सबात है। वो एक ऐसी अज़मत है जिसका सुतून उलूहियत है, लिहाज़ा उसे उलूहियत का ख़ुलूद–ओ–अब्दियत हासिल है।"

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह०)
(विलादत–ए–नबवी (स0अ0व0): 66–67)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

मासिक

अरफ़ात किरण

रायबरेली

अंक : 10 अक्टूबर २०२५ ई० वर्ष : 17

सम्पादकीय मण्डल

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

अब्दुस्सुब्हान नाख़ुदा नदवी

मुहम्मद हसन नदवी

सह सम्पादक

मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

मुहम्मद अमीन हसनी नदवी

मुहम्मद अरमुग़ान बदायूंनी नदवी

अनुवादक

मुहम्मद सैफ़

आज़माइशों में सब्र की हिदायत

अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया:

"अल्लाह की मदद सब्र के साथ वाबस्ता है। कुशादगी (राहत) तंगी के साथ है और बिलाशुब्हा सख़्ती के साथ आसानी है।"

(मुसनद अहमद: 2857)

E-Mail: markazulimam@gmail.com www.abulhasanalinadwi.org

मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली,यू०पी० 229001

मो० हसन नदवी ने एस० ए० आफसेट प्रिन्टर्स, मस्जिद के पीछे, फाटक अब्दुल्ला खाँ, सब्ज़ी मण्डी, स्टेशन रोड रायबरेली से छपवाकर आफिस अरफ़ात किरण,मर्कज़ुल इमाम अबिल हसन अल–नदवी, दारे अरफ़ात, तकिया कलां रायबरेली से प्रकाशित किया।

Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi Samiti (Punjab National Bank) A/c No. 6127002100000339 (IFSC: PUNB0612700)

आसमाँ होगा सहर के नूर ...

नतीजा-ए-फ़िक्र: अल्लामा इक़बाल (रह0)

आसमाँ होगा सहर के नूर से आईना-पोश
और ज़ुल्मत रात की सीमाब-पा हो जाएगी

इस क़दर होगी तरन्नुम आफ़रीं बाद-ए-बहार
निगहत-ए-ख़्वा वाबीदा ग़ुंचे की नवा हो जाएगी

आ मिलेंगे सीना-ए-चाकान-ए-चमन से सीना-चाक
बज़् म-ए-गुल की हम-नफ़स बाद-ए-सबा हो जाएगी

शबनम-अफ़्शानी मेरी पैदा करेगी सोज़-ओ-साज़
उस चमन की हर कली दर्द-आश्ना हो जाएगी

देख लोगे सतवत-ए-रफ़्तार-ए-दरिया का मआल
मौज-ए-मुज़् तर ही उसे ज़ंजीर-ए-पा हो जाएगी

फिर दिलों को याद आ जाएगा पैग़ाम-ए-सुजूद
फिर जबीं ख़ाक-ए-हरम से आश्ना हो जाएगी

नाला-ए-स याद रसे होंगे नवा सामान-ए-तुयूर
ख़ून-ए-गुलचीं से कली रंगीं क़बा हो जाएगी

आँख जो कुछ देखती है लब पे आ सकता नहीं
महव-ए-हैरत हूँ कि दुनिया क्या से क्या हो जाएगी

शब गुरेज़ाँ होगी आख़िर जल्वा-ए-ख़ुरशीद से
ये चमन मामूर होगा नग़मा-ए-तौहीद से

इस अंक में:

आलम यह जल रहा है बरस कर बुझाइये......................3

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

तक़वा क्या है?..4

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

फ़स्क़ व तफ़रीक़ के मसले..6

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

ग्लोबल समूद फ्लोटिला..8

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

आलम है फ़क़त मोमिन–ए–जांबाज़ की मीरास.....................10

मौलाना सलमान बिजनौरी नदवी

बूढ़ी शहीद...12

मुहम्मद मुसअब नदवी बाराबंकवी

ख़ातमुन्नबीयीन (स0अ0व0): नुबूव्वत की आख़िरी शमा 14

सैय्यद सैफ़ुद्दीन लखनवी

दीन की दावत और नवीन मीडिया.................................16

मोहम्मद नज्मुद्दीन नदवी

ताक़त का नशा...19

मुहम्मद अरमग़ान बदायूनी नदवी

सम्पादकीय

आलम यह जल रहा है बरस कर बुझाइये

● बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) से मुहब्बत ऐन ईमान है। कौन बदबख़्त होगा जिसके दिल में हुज़ूर (स0अ0व0) की मुहब्बत न हो। आप (स0अ0व0) ने जिस तरह इन्सानों को इन्सानियत का दर्स दिया, भटके हुए लोगों को मंज़िल का पता दिया, दुनिया आज भी उसी दर की मोहताज है। अफ़सोस है हम मुसलमानों पर जिन्होंने अपनी नाहमवार ज़िन्दगी से दुनिया को मंज़िल से दूर किया। इन्सानियत का रास्ता खोटा किया। जज़्बाती नारो में खो जाना, किसी जज़्बाती नारा लगाने वाले के पीछे हो जाना तो आसान है लेकिन हुज़ूर अक़सद (स0अ0व0) की मुबारक ज़िन्दगी को अपने लिए मॉडस आप्रेन्डी बनाना और अपनी ज़िन्दगी में सीरत की रोशनी पैदा करना, हमें मुश्किल लगता है। दिल रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की मुहब्बत से ऐसे भरे हुए हों कि अमली ज़िन्दगी में उसके सोते फूटते हों। सिर्फ़ दावा काफ़ी नहीं, यक़ीनन यह भी एक बड़ी चीज़ है लेकिन अस्ल चीज़ उस मुहब्बत का दिल की गहराइयों में उतर जाना है, जिसका असर इन्सान की ज़िन्दगी पर पड़ता है। काग़ज़ पर हज़ार बार लिखने से अच्छा दिल में उस मुहब्बत की छाप बिठा लेना है।

दुनिया की क़ौमें और मज़हब जिस तरह रस्मियत का शिकार हुए और मज़ाहिर में उलझ कर रह गए, अफ़सोस कि हम मुसलमानों ने भी देखा–देखी वही रविश अख़्तियार करनी शुरू कर दी। जबकि मुसलमानों को अल्लाह तआला ने देने के लिए पैदा किया था। हुज़ूरे अक़दस (स0अ0व0) की अमानत को सीने से लगाना, उसके लिए दिल–ओ–दिमाग़ को खपाना, अपनी जान को उसके लिए सोख़्ता करना, और अपना सबकुछ आप (स0अ0व0) के लिए न्यौछावर कर देना मुसलमान की शान है।

इस्लाम सरापा हक़ीक़त दीन है। यह पूरा निज़ामे ज़िन्दगी है। उसूल–ओ–अक़ायद और आमाल–ओ–इबादात की एक ख़ूबसूरत कहकशां के साथ, यहां कोई रिएक्शन नहीं। कोई रद्दे अमल नहीं। एक तय मंज़िल है, एक ख़ास ज़िन्दगी जीने का तरीक़ा है जो नबी–ए–पाक (स0अ0व0) की ज़िन्दगी से लिया गया है। आप (स0अ0व0) ने क्या किया? क्या सिखाया? सहाबा (रज़ि0) की कैसी तरबियत फ़रमाई? ख़ुद आंहज़रत (स0अ0व0) का सुलूक अपनों के साथ और दुश्मनों के साथ क्या था? आप (स0अ0व0) ने किस तरह दरगुज़र का मामला फ़रमाया। फ़तेह मक्का के मौक़े पर किस तरह के वसाएल होते हुए आप (स0अ0व0) ने किस तरह आम माफ़ी का ऐलान फ़रमाया, किस तरह दिलों को फ़तेह किया और "यदख़ुलूना फ़ी दीनिल्लाहि अफ़वाजा" का समा बंध गया।

आज फिर ज़रूरत है उसी रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के नमूने को अख़्तियार करने की। रहमतुल–लिल–आलमीन की उम्मत दीने रहमत के साथ आगे आए–

आलम यह जल रहा है बरस कर बुझाइये

"इन्नका लअला ख़ुलूकिन अज़ीम" की गवाही कुरआन मजीद में जिस ज़ाते पाक के बारे में मौजूद है, वही आलमे इन्सानियत के लिए नमूना है और मुसलमान सबसे बढ़कर उसके नुमाइन्दा हैं। काश कि हम मुसलमानों में यह हक़ीक़त पसंदी पैदा हो और हर तरह के जज़्बाती नारों से अलग होकर, जज़्बाते मुहब्बत के साथ शरशार होकर हम सीरते मुबारका का तोहफ़ा अपनी ज़िन्दगी से आलमे इन्सानियत के सामने पेश कर सकें और नुमाइन्दा–ए–रसूल बनकर दुनिया को हलाकत के ग़ार में गिरने से बचा सकें।

गालियां जिसने दीं उसको तोहफ़े दिये — जख़्म जिसके लगे ज़ख़्म उसके सिये
आफ़ियत की दुआ मांगी सबके लिए — की जफ़ा जिसने बदले वफ़ा से दिये
जिसने सबको पिलाया मुहब्बत का जाम — उसपे लाखों दरूद उसपे लाखों सलाम
मौला या सल्ली व सल्लिम दाइमन अबदन — अला हबीबिका ख़ैरिल ख़ल्कि कुल्लिहिम

तक़्वा क्या है?

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

मुँह की एहतियातः

आजकल एक बात बहुत आम होती जा रही है, लोग इस बात पर बिल्कुल तवज्जो नहीं देते कि हम जो खा रहे हैं वह हलाल है या हराम। वह यह नहीं जानते कि हराम खाने के नतीजे में अल्लाह तबारक व तआला का ग़ज़ब होगा और यह वही चीज़ है जिसके मुतअल्लिक़ रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया कि जहन्नम में सबसे ज़्यादा दाख़िल करने वाली जो सिफ़त है, वह "मुँह" है, यानी ज़ुबान का चटख़ारा और हराम–हलाल का फ़र्क़ न करना। हराम माल से पेट भरना और हराम कमाई करना। इसमें वह सारी शक्लें भी शामिल हैं जो आज राएज हो चुकी हैं और अगर इस पर कोई टोके तो पर्दे डाल दिए जाते हैं। कहा जाता है कि रिश्वत को रिश्वत नहीं, नज़राना कहो, जब कि हदीस में साफ़ कहा गया है:

(रिश्वत लेने वाला और रिश्वत देने वाला दोनों जहन्नमी हैं)

आज के इन हालात में, और ख़ास तौर पर इस मुल्क में, अगरचे उलमा ने ज़रूरतन इसकी इजाज़त दी है कि अगर तुम्हारा हक़ दब रहा है और नहीं मिल रहा है तो उसके लिए इजाज़त है; लेकिन अगर वो तुम्हारा हक़ नहीं है, बल्कि तुम पैसे देकर दूसरे का हक़ ले रहे हो, तो ये रिश्वत भी है और हराम–ख़ोरी भी, कि आदमी रिश्वत देकर हराम माल खा रहा है। असलन वो दूसरे का हक़ था जो वो ले रहा है।

ऐसे ही आदमी अपने खेत में हल चलाता है और जोतते हुए एक बालिश्त बढ़ा लेता है; ज़ाहिर है उसके खेत में एक बालिश्त हिस्सा हराम आ गया। अब उसमें जो फ़सल भी तैयार की जा रही है वह हराम है, क्योंकि हराम का हिस्सा हलाल में शामिल हो गया। याद रखें! अगर नजासत हलाल में शामिल हो जाए तो वह उसे भी नापाक बना देती है।

ज़कात की अदायगी का एहतिमाम हिसाब लगाकर ज़रूरी है। आजकल लोग "अलल–हिसाब" दे देते हैं; यह भी ग़लत है। कुछ कहते हैं कि हमने तो एक करोड़ रुपया दे दिया; ज़ाहिर है यह ग़लत है। मुमकिन है कि तुम्हारे पास एक अरब या उससे ज़्यादा की मालियत हो; तो एक करोड़ ज़कात कहाँ हुई? अगर तुम्हारे पास एक अरब की मालियत है तो ढाई करोड़ ज़कात होगी। इसलिए अपने पैसों का हिसाब लगाना, कारख़ानों का हिसाब लगाना, कारोबार का हिसाब लगाना ज़रूरी है, फिर हिसाब निकालकर ढाई फ़ीसद निकालना और ग़रीबों को देना फ़र्ज़ है। यह भी देखना चाहिए कि ज़कात का मुस्तहिक़ कौन है? कुरआन मजीद में उसके मसारिफ़ भी बयान हुए हैं।

ज़कात के माल में जो नजासत आ जाती है, आदमी जो ज़कात निकालता है, वो माल का मैला है जो निकल जाता है, तो माल साफ़ हो जाता है। अब कोई यह सोचे कि क्या मैल ग़रीबों को दिया जाता है? समझना चाहिए कि अल्लाह तआला ने जो मसारिफ़ बयान किए, यह सारे के सारे मसारिफ़ हक़ीक़तन बड़े–बड़े फ़िल्टर हैं, ये छलनियाँ हैं। जब यह नजासत वहाँ पहुँचती है तो ऐसी छन जाती है कि सब कुछ साफ़–सुथरा हो जाता है, फिर वो उनके लिए ऐन तैय्यिब और हलाल है।

एक ग़रीब के लिए ज़कात का माल नजिस नहीं, अमीर की नजासत निकली और ग़रीब के फ़िल्टर में गई तो ऐसी पाक हो गई, हो सकता है कि उस अमीर के माल से भी ज़्यादा तैय्यिब हो।

हदीस में आता है कि एक मर्तबा रसूलुल्लाह (स0अ0व0) हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) के घर में तशरीफ़ लाए, देखा तो हांडी चढ़ी हुई है और गोश्त पक रहा है। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) को गोश्त से रग़बत थी, आपने हज़रत आयशा से पूछा कि यह किसका गोश्त है? उन्होंने कहा कि ये बरीरा का गोश्त है। बरीरा एक बांदी थीं। फ़रमायाः "लाओ तो मुझे भी खिलाओ।" हज़रत आयशा ने कहाः ये बरीरा का है और सद्क़ा का

है। बरीरा बोलीं कि अगर अल्लाह के नबी (स0अ0व0) नोश फरमाएँ तो मुझे बड़ी खुशी होगी। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया:

"यानी उनके लिए सदक़ा व ज़कात था, अब जब यह उनकी ग़रीबी की छलनी में छन गया तो अब हमारे लिए पाक व साफ़ और पाक है; हमारे लिए अब ये सदक़ा नहीं बल्कि हदिया हो गया।"

इससे यह मसअला भी मालूम हुआ कि अगर कोई ग़रीब अपने उस माल से किसी को हदिया दे जो उसे ज़कात में हासिल हुआ, तो वो पाक है, क्योंकि वो माल ग़रीबी की छलनी में छन चुका है। लेकिन अगर कोई अमीर को ज़कात दे, तो वो साफ़ नहीं होगी; माल की वो नजासत उसके माल की नजासत से मिल जाएगी। बहुत से अमीर लोग भी ज़कात ले लेते हैं और अपना माल भी नजिस कर लेते हैं। इसलिए ज़कात देने वाला भी सोच–समझकर ज़कात दिया करे, वरना ज़कात अदा नहीं होगी।

ज़ुबान की एहतियात:

ज़ुबान की एहतियात भी बड़ी अहम बात है। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने दसियों जगह इसकी ताकीद फ़रमाई कि ज़ुबान की हिफ़ाज़त करो। एक हदीस में रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने ज़ुबान की यह मिसाल दी कि जिस तरह दरांती खेत काटती है, उसी तरह ज़ुबान भी दरांती की तरह चलती है। वो सही भी बोलती है और ग़लत भी बोलती है। जब ग़लत बोलती है तो आदमी को कहीं से कहीं पहुँचा देती है।

क़ुरआन मजीद में भी हुक्म है:

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह का लिहाज़ रखो और जची–तुली बात कहो।"

"सदीदा" में यह तमाम मफ़हूम शामिल हैं, यानी ज़ुबान से जो कुछ कहो सोच–समझकर कहो, धोखा न दो, झूठ न बोलो, ग़लत बात न कहो। ये सारी बातें इंतिहाई ख़तरनाक हैं और इनसे समाज बिगड़ता है।

हदीस में आता है कि सबसे ज़्यादा जहन्नम में ले जाने वाली बातों में ज़्यादा बोलना, झूठ बोलना, चुगली करना, धोखा देना, ख़यानत करना है। आदमी ज़ुबान से भी ख़यानत करता है, वो कहता कुछ है और होता कुछ है। फिर इसके साथ फ़हश बकना और ज़ुबान का बे–जगह इस्तेमाल करना, यह सारी चीज़ें इसमें शामिल हैं।

रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने दरांती से ज़ुबान की जो मिसाल दी, यह इंतिहाई बलीग़ मिसाल है। ज़ुबान भी दरांती की तरह "कट–कट" खूब चलती है; इसमें आदमी यह नहीं देखता कि इससे कितने दिल कट गए, कितने ख़ानदान टूट गए।

आदमी ज़ुबान का इस्तेमाल सही नहीं करता, कभी किसी की चुगली कर दी, कभी सामने कोई ऐसी बात कह दी जो दिल को लग गई। अरबी का मशहूर शेर का अर्थ है:

(यानि तीर–ओ–नेज़ा और तलवार का घाव भर जाता है, लेकिन ज़ुबान का घाव नहीं भरता; आदमी हमेशा उसे दिल में लिए रहता है)

ज़माना–ए–जाहिलियत में इस चीज़ की बड़ी अहमियत थी, अगर किसी ने हज्व में कोई शेर कह दिया तो वह बहुत ख़तरनाक होता था। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने एक मर्तबा इसी बुनियाद पर फ़ैसला किया; किसी ने शिकायत की कि इस शायर ने हमारी हज्व की है। हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) ने हज़रत हस्सान (रज़ियल्लाहु अन्हु) को बुलाया और उस शेर के मुतअल्लिक़ पूछा। उन्होंने कहा कि ये तो ऐसा शेर है, गोया इसने क़त्ल कर दिया।

आज भी इस चीज़ की बड़ी अहमियत है। कई मर्तबा आदमी ज़ुबान से ऐसी बात कह देता है जो बड़ी ख़तरनाक होती है और दिल में लग जाती है। इसीलिए ज़ुबान का सही इस्तेमाल होना चाहिए, यह ऐसी तलवार है जिसका घाव आसानी से नहीं भरता।

आदमी अपनी ज़ुबान से चालाकी का मुज़ाहिरा करता है, दूसरों को परेशान करता है, सताता है, यह सब बातें ज़ुबान के ग़लत इस्तेमाल में शामिल हैं।

हदीस में आता है कि रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमाया:

"सही मुसलमान वो है जिसकी ज़ुबान और उसके हाथ से तमाम लोग महफ़ूज़ रहें।"

हमें यह कोशिश करनी चाहिए, और यह हमारे ऊपर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है; कि हमारी ज़ुबान और हमारे हाथ से किसी की दिल–आज़ारी न हो, और न ही किसी को तकलीफ़ पहुँचे।

फ़स्ख़ व तफ़रीक़ के मसले

मुफ़्ती राशिद हुसैन नदवी

तफ़रीक़ का दूसरा सबब, शौहर का ग़ायब ग़ैर मफ़क़ूद होना:

अगर शौहर किसी जगह चला गया, सबको उसका पता भी मालूम है, लेकिन न वो आता है, न बीवी को अपने पास बुलाता है, न तलाक़ देता है, न ही बीवी की ख़बर लेता और न ही नान–नफ़क़ा भेजता है, तो इस शख़्स को "मफ़क़ूद" तो नहीं कहा जा सकता, इसलिए कि उसका पता मालूम है, लेकिन बीवी के हक़ अदा न करने में इसके और मफ़क़ूद–अल–ख़बर के दरमियान कोई फ़र्क़ नहीं है। अगर इसकी बीवी दार–उल–क़ज़ा में अपील करे तो मालिकी मसलक के मुताबिक़ इसका निकाह फ़स्ख़ किया जा सकता है:

"قال في المنيطة: اعلم أن الغائبين على أزواجهم خمسـن، فالأول غائب لم يترک نفقة ولا خلف مالا ولا لزوجته عليه شـرط في المغيب فإنها تقوم عند السلطان بعدم الإنفاق (إلى) وسواء كان الغائب في ہذه الثلاثة الأوجه معلوم المكان أو غير معلوم۔" (مواهب الجليل في شرح مختصر خليل١٥٦-٤/٥٥ :، ط؛

(देखिए फतवा अल्लामा सईद बिन सिद्दीक़, अल–हिलत अन–नाजिज़ह, महदुश–शरीअह, पृ. 87)

जब दारुल–क़ज़ा में ग़ायब ग़ैर मफ़क़ूद की बीवी इस्तिग़ासा दायर करे तो क़ाज़ी को कोशिश करनी चाहिए कि शौहर अगर बीवी को रखना चाहता है तो रखे, वरना ख़ुला करे, इसलिए कि ख़ुला के ज़रिए तफ़रीक़ में किसी का कोई इख़्तिलाफ़ नहीं है। (अल–हिलह, पृ. 313, महदुश–शरीअह)

और अगर ये मुमकिन न हो तो उलमा–ए–मालिकिय्यह के फ़तवों और उनकी किताबों के मुन्तक़दात की रोशनी में अल–हिलह अन–नाजिज़ह और किताबुल फ़स्ख़ व तफ़रीक़ में कार्रवाई के लिए ज़ैल की हिदायतें दी गई हैं। मौलाना अब्दुस्समद रहमानी फ़रमाते हैं:

1. ज़ौजा गवाहों से ग़ायब ग़ैर मफ़क़ूद शौहर के साथ अपना निकाह साबित करे।
2. फिर यह कि वो नफ़क़ा देकर नहीं गया है।
3. न वहां से नफ़क़ा भेजा है।
4. न यहां कुछ इंतिज़ाम करके गया है।
5. न मैंने नफ़क़ा माफ़ किया है।
6. फिर यह कि नफ़क़ा उस पर वाजिब है, हम उसके मुस्तहिक़ हैं।
7. लेकिन इस वाजिब को वो अदा नहीं कर रहा है।
8. इसके बाद अगर क़ाज़ी के पास उसके नफ़क़ा की कोई कफ़ालत कर ले तो ख़ैर, वरना इस शख़्स के पास अपना ये हुक्मनामा भेजे: "ख़ुद आकर अपनी बीवी के हक़ूक़ अदा करो, या उसे अपने पास बुला लो, या वहीं से कोई इंतिज़ाम करो, वरना उसे तलाक़ दे दो। अगर तुमने इन बातों में से कोई बात न की तो फिर हम ख़ुद तुम दोनों में तफ़रीक़ कर देंगे।"
9. अगर इस पर भी शौहर कोई सूरत क़बूल न करे तो एक महीने की ताज़ील के बाद तफ़रीक़ कर दे।
10. मालिकिय्यह मसलक पर यह ज़रूरी है कि हुक्मनामा दो सिक्का आदमियों को सुना कर उनके हवाले करे कि इसे ग़ायब शख़्स के पास ले जाओ और ये दोनों शख़्स ग़ायब को हुक्मनामा पहुंचाकर उससे जवाब तलब करें, और जो कुछ जवाब तहरीरी या ज़बानी, नफ़ी या इस्बात में दे, उसको महफ़ूज़ रखें ताकि वापस आकर उस पर शहादत दें, और अगर कुछ जवाब न दे तो उसी की शहादत दें।

"قال العلامة الدر دير تحت قول المختصـر (ولم يفد كتاب وحده) من غير شهادة علىٰ الحاكم (إلى) قوله فلا بد من شاهدين من يشـهدان على أن هذا كتاب القاضى الغلانى وانه أشهدهما

चुनांचे अल्लामा सईद बिन सिद्दीक़ के फतवे में सराहत से क़ाज़ी को तफ़रीक़ की इजाज़त दी गई है। (अल–हिलह अन–नाजिज़ह, पृ. 210, महदुश–शरीअह)

"أما الجواب عن امرأة المعسر الذى لا يجد ما ينفق عليها ففي المدونة قال لها مالك: وكل من لم يقو على نفقة امرأته فرق بينهما۔"

(الحيلة الناجزة، ص: ٢١٠، مطبوعه مهد الشريعة)

इस मसले की तफ़सील करते हुए मौलाना ख़ालिद सैफ़ुल्लाह रहमानी लिखते हैं:

"अगर शौहर नफ़क़ा की अदायगी से क़ासिर हो, उसके बाप और दादा भी औरत की किफ़ालत (खर्च) को तैयार न हों, और न खुद औरत इस मौक़े पर हो कि अपनी परवरिश आप करे, तो उसे हक़ है कि क़ाज़ी के पास निकाह तोड़ने की दरख़्वास्त दे। क़ाज़ी के सामने जब यह बात साबित हो जाए कि मर्द वाक़ई इससे आजिज़ है, तो अपनी सवाबदीद पर मर्द को कुछ दिनों की मोहलत दे, अगर इस मोहलत से भी वो फायदा न उठा सके तो उसका निकाह तोड़ दे।"

वाज़ेह हो कि निकाह उस वक़्त तोड़ा जाएगा जब मर्द इंतहाई बुनियादी ज़रूरतें भी पूरी करने से क़ासिर हो। बक़ौल यहया अगर औरत को शोहर से रोटी, ज़ैतून का तेल और मोटा कपड़ा मयस्सर होता हो तो भी तफ़रीक़ नहीं की जाएगी।

(तलाक़ व तफ़रीक़, पृ. 62–63)

और क़ाज़ी अब्दुस्समद रहमानी साहब ने किताबुल फ़स्ख़ व तफ़रीक़ में लिखा है कि शाफ़ई मसलक में (यानि अब वजूद) के सिवा कोई दूसरा औरत को तबर्रुअन नफ़क़ा दे तो इस तरह के तबर्रुअ को क़बूल करना औरत पर लाज़िम नहीं है (और आगे है कि) जो लोग यहाँ फ़स्ख़ के जवाज़ के क़ाइल हैं, उनमें कुछ एक महीना, कुछ दो महीने और कुछ सिर्फ़ तीन दिन तक ताजील के क़ाइल हैं।

(किताबुल फ़स्ख़ व तफ्रीक, पृ. 83, 87)

ज़ाहिर है, क़ाज़ी अपनी सवाबदीद पर अमल करेगा।

على ما فيه۔"

11. अगर ऐसी जगह पर हो जहां आदमी भेजने का इंतिज़ाम मुमकिन न हो तो मजबूरी के वक़्त वाक़्या की तहक़ीक़ के बाद तफ़रीक़ का हुक्म कर दे। (किताबुल फ़स्ख़ व तफ़रीक़, पृ. 77–78; अल–हिलह अन–नाजिज़ह, पृ. 314–315)

तफ़रीक़ का तीसरा सबब' शौहर का नफ़क़ा अदा करने से आज़िज़ होना:

अगर शौहर नान–नफ़क़ा अदा न कर सकता हो तो फ़िक़्ह–ए–हन्फ़ी में इसकी बुनियाद पर तफ़रीक़ नहीं की जा सकती। अस्लन फ़िक़्ह–ए–हन्फ़ी में इसके बारे में हुक्म यह है कि क़ाज़ी औरत से कहेगा कि उधार लेकर खाओ, पियो और पहनो, लेकिन ज़ाहिर है कि अमलन ये शक्ल मुमकिन नहीं थी।

इसलिए मुतअख़्ख़िरीन ने यह हल निकाला कि शाफ़ई मसलक के नज़दीक चूंकि इस तरह की सूरत में क़ाज़ी को तफ़रीक़ का हक़ हासिल होता है, लिहाज़ा औरत से कहा जाए कि किसी शाफ़ई क़ाज़ी से तफ़रीक़ करा ले। (शामी, बाब–अन–नफ़क़ह, मतलूब फी फ़स्ख़–अन–निकाह बिल अज्ज़ अन–अन–नफ़क़ह, 3/590, दारुल फ़िक्र)

"قوله ولا يفرق بينهما بعجزه عنها أى غائباً كان أو حاضراً۔"(شامي، باب النفقة مطلب في فسخ النكاح بالعجز عن النفقة ۳/۵۹۰ :، ط: دار الفكر)

और साहिब–ए–शरह वक़ायह ने ये तजवीज़ पेश की कि क़ाज़ी इस मसले को हल करने के लिए अपना एक शाफ़ई अल–मज़हब नायब मुक़र्रर कर ले: (शरह–अल–वक़ायह, 2/174, बाब–अन–नफ़क़ह)

इस तरह के और भी हल हनफ़ी उलमा ने पेश किए लेकिन हिंदुस्तान के दारुल–क़ज़ाओं में उन पर अमल दुश्वार था, लिहाज़ा कई दूसरे मसाइल की तरह इस मसले में भी इमाम मालिक का मसलक इमारत–ए–शरियह बिहार और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के दारुल–क़ज़ाओं में इख़्तियार कर लिया गया, इसलिए कि मालिकी मसलक में नान–नफ़क़ा से आज़िज़ी की सूरत में क़ाज़ी के लिए तफ़रीक़ की इजाज़त है।

ग्लोबल समूद फ्लोटिला

सैय्यद मुहम्मद मक्की हसनी नदवी

2007 में ग़ज़ा पट्टी पर इस्राइल ने मुहासरे की शुरुआत की और समय के साथ इसे लम्बा और सख़्त बनाया तो इन मुश्किलों ने इंसानी त्रासदी को जन्म दिया है। खुराक, दवा, पानी, बुनियादी सुविधाओं की सख़्त कमी और लगातार बमबारी ने ज़िंदगी को तबाहकुन बना दिया है। इस पृष्ठभूमि में, वैश्विक स्तर पर विभिन्न संगठनों और नागरिकों ने "सुमूद फ़्लोटिला" का मन्सूबा शुरू किया है ताकि ग़ज़ा पट्टी की नाकाबंदी को चुनौती दी जा सके और मानवीय सहायता पहुँचाई जा सके।

2025 का "ग्लोबल सुमूद फ़्लोटिला" इस आंदोलन का एक नया और बड़ा चरण है। शब्द "सुमूद" अरबी में "स्थिरता, दृढ़ता, पायेदारी" के अर्थ में आता है। यह वह भावना है जो ग़ज़ा पट्टी के फ़िलिस्तीनियों ने बरसों तक नाकाबंदी और ज़ुल्म व बर्बरता के बावजूद क़ायम रखी है। "फ़्लोटिला" का मतलब है समुद्री "बेड़ा" या कश्तियों का काफ़िला। इस तरह, सुमूद फ़्लोटिला का विचार एक मानवीय सहायता के समुद्री काफ़िले के रूप में है जो घिरे हुए क्षेत्र तक सहायता पहुँचाने और नाकाबंदी को तोड़ने की कोशिश करेगा।

असल में सुमूद फ़्लोटिला योजना की शुरुआत पिछले वर्षों में होती रही है। उदाहरण के तौर पर फ़्रीडम फ़्लोटिला अभियान (Freedom Flotilla): 2010 में तुर्की की मावी मरमरा (MV Mavi Marmara) जहाज़ पर इस्राइली हमले ने इस आंदोलन को अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्धि दी और वैश्विक स्तर पर मानवाधिकार और न्याय के संदर्भ में इसे विषय बना दिया।

2025 का ग्लोबल सुमूद फ़्लोटिला एक नया और विस्तारिक कदम है जिसमें अनेक देश, संगठन और व्यक्ति भाग ले रहे हैं और यह भौगोलिक, राजनीतिक और मानवीय स्तर पर विभिन्न पेचीदगियों का वाहक है।

❖ यह बेड़ा 1 सितंबर 2025 को स्पेन के बंदरगाह बार्सिलोना से रवाना हुआ।

❖ इसके अलावा, ट्यूनिस के बंदरगाह सिदी बौसईद से भी कुछ जहाज़ रवाना किए जाने थे, हालांकि मौसम की ख़राबी की वजह से रवाना होने में देरी हुई।

❖ कुल मिलाकर यह काफ़िला लगभग 50 जहाज़ों पर आधारित है, जिनमें लगभग 44 देशों के कार्यकर्ता शामिल हैं।

❖ कार्यकर्ताओं की सूची में डॉक्टर, सामाजिक कार्यकर्ता, संसदीय सदस्य, कलाकार और आम नागरिक शामिल हैं।

❖ उद्देश्यों में मुख्य रूप से इस्राइली नाकाबंदी को तोड़ना, इंसानों के आने-जाने का रास्ता बनाना और ज़रूरी सहायता पहुँचाना है।

यह फ़्लोटिला चार बड़े संगठनों के संयुक्त तत्वावधान में काम कर रही है:

(1) Global Movement to Gaza (ग्लोबल आंदोलन बराए-ग़ाज़ा)

(2) Freedom Flotilla Coalition (आज़ादी फ़्लोटिला गठबंधन)

(3) पश्चिम सुमूद फ़्लोटिला (West Sumud Flotilla)

(4) सुमूद नुसंतारा (Sumud Nusantara): एक स्थानीय संगठन जो दक्षिण-पूर्वी एशिया से भाग ले रहा है।

यह संगठन पहले भी सहायता और मानवाधिकार अभियानों में सक्रिय रह चुके हैं और जन-एकजुटता तथा वैश्विक अंतरात्मा को जगाने के प्रयासों का हिस्सा हैं।

काफ़िला अपने साथ खाद्य सामग्री, साफ़ पानी, दवाइयाँ, चिकित्सकीय उपकरण और अन्य मानवीय वस्तुएँ लाया है। इसके अलावा, अंतरराष्ट्रीय हस्तियों ने भी भाग लिया है ताकि मीडिया ध्यान दे और नैतिक दबाव बने। उदाहरण के लिए ग्रेटा थनबर्ग (Greta Thunberg) जो एक राजनीतिक कार्यकर्ता भी हैं, स्वीडन से इस काफ़िले में शामिल हैं। इसके अलावा यूरोप के कुछ देशों ने इस बेड़े की समुद्री सुरक्षा के लिए अपने युद्धपोत भेजने की घोषणा की है।

इस पूरी कोशिश और जान को जोखिम में डालने के महत्वपूर्ण उद्देश्य और वैचारिक आधार यह हैं:

(1) नाकाबंदी को तोड़ा जाए और सीधे समुद्री रास्ते से सहायता पहुँचाने की कोशिश की जाए।

(2) मानवीय सहायता जैसे चिकित्सकीय सुविधाएँ, दवाइयाँ, भोजन और अन्य ज़रूरी सामान की आपूर्ति की जाए।

(3) जन-जागरूकता और वैश्विक ध्यान इस मुद्दे की ओर आकर्षित किया जाए और जब इस आंदोलन का हिस्सा प्रसिद्ध हस्तियाँ और कार्यकर्ता बनेंगे तो जन और

शासन की अंतरात्मा को जगाया जा सकेगा।

(4) इस्राइल को अंतरराष्ट्रीय क़ानूनों और मानवाधिकारों के दायरे में सीमित किया जाए और अगर वह फ़्लोटिला को रोकने की कोशिश करे तो उसके ख़िलाफ़ क़ानूनी व नैतिक प्रतिक्रिया उत्पन्न हो।

(5) यह काफ़िला एक प्रतीक है कि यद्यपि फ़िलिस्तीनी जनता को नाकाबंदी और ज़ुल्म का सामना है, लेकिन दुनिया के विभिन्न हिस्सों से लोग उनके समर्थन में उठ खड़े हैं।

वैश्विक सुमूद फ़्लोटिला अपने सफ़र में केवल समुद्री लहरों का सामना नहीं कर रही, बल्कि ताक़तवर और हथियारबंद रुकावटों का भी मुक़ाबला कर रही है। क़ाबिज़ इस्राइली सरकार ने खुलेआम धमकी दी है कि वह इस बेड़े को ग़ाज़ा तक नहीं पहुँचने देगी और इसे "लड़ाका ज़ोन" में दाख़लि होने से पहले ही रोक देगी। कुछ ख़बरों के मुताबिक़ इस्राइली ड्रोन ने काफ़िले की कश्तियों को क़रीब आकर डराने की कोशिश की और यहाँ तक दावा किया गया कि कुछ जहाज़ों को निशाना बनाकर नुक़सान भी पहुँचाया गया। यह स्थिति काफ़िले के प्रतिभागियों के लिए न सिर्फ़ शारीरिक बल्कि मानसिक दबाव का भी कारण है।

राजनीतिक मोर्चे पर कुछ राज्य और सरकारें खुले तौर पर इस बेड़े का विरोध कर रही हैं, जबकि कुछ मीडिया चौनल इसकी अहमियत घटाने या इसे संदेहास्पद अंदाज़ में पेश करने की कोशिश कर रहे हैं। इन जहाज़ों पर बैठे लोग जानते हैं कि अगर क़ाबिज़ ताक़त ने हमला किया या जहाज़ों को ज़ब्त कर लिया तो वे क़ैद, घायल या शहीद भी हो सकते हैं। लेकिन फिर भी वे अपनी जान को दाँव पर लगाकर एक मज़लूम क़ौम के लिए उम्मीद की किरण बनने निकले हैं।

वैश्विक सुमूद फ़्लोटिला ने रवाना होते ही दुनिया की अंतरात्मा को झकझोर दिया। एक तरफ़ क़ाबिज़ सरकार की धमकियाँ और आक्रामकता है, तो दूसरी तरफ़ दुनिया भर के इंसानों और क़ौमों की हमदर्दी और समर्थन का सैलाब है। कई देशों ने खुले शब्दों में ऐलान किया है कि इस शांतिपूर्ण सहायता अभियान के ख़िलाफ़ किसी भी प्रकार की आक्रामकता को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। यूरोप के कुछ देशों ने न केवल नैतिक बल्कि व्यावहारिक मदद का भी वादा किया है। जानकारी के मुताबिक़ कुछ देशों ने इस बेड़े की सुरक्षा के लिए अपने युद्धपोत देने की बात भी की, ताकि दुनिया यह जान ले कि इंसानियत की हिफ़ाज़त किसी एक क्षेत्र या क़ौम की ज़िम्मेदारी नहीं बल्कि पूरी दुनिया की साझी अमानत है।

मीडिया और जन–साधारण में भी इस फ़्लोटिला की गूँज सुनाई दे रही है। सोशल मीडिया पर लाखों आवाज़ें इस अभियान के लिए दुआएँ और शुभकामनाएँ भेज रही हैं। यूरोप से लेकर एशिया तक और अफ़्रीका से लेकर लैटिन अमरीका तक, लोग एक ही बात कह रहे हैं कि ग़ज़ा के मासूम बच्चे भूख और डर के अंधेरों में और न डूबें।

हालाँकि इस फ़्लोटिला को बदनाम करने या इसकी अहमियत घटाने की कोशिशें भी की जा रही हैं। कुछ मीडिया रिपोर्टों और वायरल वीडियोज़ ने इसे ग़लत रंग देने की कोशिश की। लेकिन सच्चाई यह है कि यह अभियान किसी राजनीति या ताक़त का खेल नहीं, बल्कि दिलों की पुकार और इंसानियत की आवाज़ है।

वैश्विक सुमूद फ़्लोटिला ने यह साबित किया है कि दुनिया की सोई हुई अंतरात्मा अब भी जग सकती है। यह अभियान दरअसल इंसानियत के हक़ में एक जनमत–संग्रह (रेफ़रेंडम) है और दुनिया के हर ज़ी–शऊर (सचेत) व्यक्ति को इस सवाल के सामने ला खड़ा करता हैरू क्या हम मज़लूमों के साथ खड़े हैं या ज़ालिम के ख़ामोश समर्थक बने रहेंगे?

वैश्विक सुमूद फ़्लोटिला का यह सफ़र केवल समुद्री जहाज़ों का सफ़र नहीं, बल्कि उम्मीद और डर के बीच झूलता हुआ एक मानवीय सपना है। इसका नतीजा कुछ भी निकले, यह पहले ही दुनिया के दिलों पर अपनी छाप छोड़ चुका है। यह सफलता केवल सहायता पहुँचने की नहीं होगी, बल्कि एक घुटन–भरे क्षेत्र में रौशनी की किरण दाख़लि होने की होगी। ग़ाज़ा के बीमार बच्चे, घायल नौजवान और बेसहारा माएँ जान पाएँगी कि दुनिया उन्हें भूल नहीं गई। उनके ज़ख़्मों पर मरहम रखने वाले अब भी बाक़ी हैं। यह सफलता इस नाकाबंदी–ग्रस्त क्षेत्र में नई ज़िंदगी और नए हौसले का पैग़ाम होगी। इसके साथ–साथ दुनिया भर में न्यायपसंद आवाज़ों को ताक़त मिलेगी और इस्राइल पर अंतरराष्ट्रीय दबाव में इज़ाफ़ा होगा।

अगर ख़ुदानाख़ास्ता यह काफ़िला अपनी मंज़िल तक न पहुँच पाया, अगर इस पर हमला किया गया या इसे ज़बरदस्ती रोक दिया गया, तो भी यह नाकामी नहीं होगी। बल्कि यह दुनिया के सामने एक आईना होगा जो बताएगा कि मज़लूमों की आवाज़ें कैसे दबाई जा रही हैं। इन जहाज़ों पर बैठे कार्यकर्ता अगर क़ैद या नुक़सान से दो–चार भी हों, तो उनकी क़ुर्बानी वैश्विक अंतरात्मा को और झकझोर देगी। यह फ़्लोटिला एक प्रतीक है, और प्रतीक कभी नहीं मरते।

आलम है फ़क़त
मोमिन-ए-जांबाज़ की मीरास

मौलाना सलमान बिजनौरी नदवी

उम्मत मुस्लिमा एक ऐसी उम्मत है जिसको पूरी इंसानियत की रहबरी व रहनुमाई और हिदायत के लिए बरपा किया गया है। यह उम्मत कोई आम उम्मत या पिछली उम्मतों की तरह एक दायरे तक महदूद नहीं है बल्कि यह उम्मत आलमगीर उम्मत है और इसका पैग़ाम व मुक़ाम भी आलमगीर व हमागीर है। इसके अंदर आफ़ाक़ियित और वुसअत है और इसमें इंसानियत के हाथ को थामने और उसकी डूबती कश्ती को पार लगाने की सलाहियत मौजूद है। इसी आलमगीर और आफ़ाक़ी उम्मत ही से आलम अरबी व इस्लामी का वजूद और बक़ा है। आलमे इस्लाम की पहचान और उसका तआरुफ़ ही इस उम्मत से है लेकिन क्या उम्मते मुस्लिमा और मौजूदा दुनिया के मुसलमान इस हक़ीक़त से वाक़िफ़ हैं? क्या वह अपने मुक़ाम व पैग़ाम और क़द्र व मन्ज़िलत से बाख़बर हैं? क्या वह हक़ीक़ी माने में उम्मते मुस्लिमा के ज़ुमरे में शामिल होने के लायक़ हैं? क्या वह अपने वजूद को आलम इंसानी की बक़ा का ज़ामिन समझते हैं?!

क्या उम्मते मुस्लिमा के अफ़राद यह कहने की जुर्रत रखते हैं कि हमारे पास एक ऐसा मैसेज और पैग़ाम है जिसके ज़रिए पूरी दुनिया क्या, पूरी कायनात मुसख़्ख़र हो सकती है। हमारे पास इंसानियत को दुनिया की तंगी से निकाल कर उसकी वुसअतों में दाख़लि करने की सलाहियत है। हमारे पास एक ऐसा नुस्ख़ा–ए–क़ीमिया है जिसकी बुनियाद पर अफ़सुरदा दिलों की अफ़सुरदगी दूर हो सकती है। उनको एक नई और खुशहाल ज़िंदगी मयस्सर हो सकती है। सूखी खेती हरी–भरी और सरसब्ज़ व शादाब हो सकती है। क्या इस आफ़ाक़ी और आलमगीर उम्मत का एक फ़र्द भी ऐसा है जो तमामतर असबाब व वसाइल और ज़िंदगी की तमामतर आसाइशों और फ़रावानियों के बावजूद यह कहने की जुर्रत कर सके? क्या कोई हज़रत रिबई बिन आमिर (रज़ियल्लाहु अन्हु) का रुस्तम के दरबार में जुर्रत मंदाना क़दम अपने तसव्वुर और उसका अदना ख़्याल ही अपने क़ल्ब में ला सकता है? "है कोई मर्द–ए–मोमिन?!"

यह एक ऐसा सवाल है, जब भी किसी बाशऊर व दर्दमंद व फ़िक्रमंद मुसलमान के ज़ेहन में आता है तो क़ल्ब व ज़ेहन मुतास्सिर हो जाता है और उसको बेकल व बेक़रार कर देता है। पूरी इंसानी दुनिया पर नज़र दौड़ा लें, अरब हो या अज़म, आलम–ए–इस्लामी हो या आलम–ए–अरबी, कहीं से इस सवाल का जवाब मिलने की उम्मीद नज़र नहीं आती। बड़े अफ़सोस के साथ यह कहने की जुर्रत कर रहा हूँ कि मुसलमानान–ए–आलम जो उम्मते मुस्लिमा और ख़ैर–ए–उम्मत के लक़ब से मौसूफ़ हैं, वह खुद इस आफ़ाक़ी और हमागीर पैग़ाम और मुक़ाम से नावाक़फ़ि हैं, वह खुद इस नेमत–ए–उज़्मा की हक़ीक़त से नाबालिद व नाआशना हैं या यूँ कहिए कि उनके अंदर ईमान व यक़ीन की वह क़ुव्वत व ताक़त और वह एतिमाद व भरोसा ही नहीं कि वह कुछ कर सकें या कह सकें या इस तअल्लुक़ से अपने अंदर कुछ करने का जज़्बा–ए–सादिक ही बेदार कर सकें।

हक़ीक़त यह है कि इस वक़्त मुसलमानों की बड़ी तादाद दुनिया के माल व मताअ और ऐश व इशरत में मगन दाद–ए–ऐश दे रही है। लुत्फ़अंदोज़ी और ख़्वाहिशात–ए–नफ़्स की तस्कीन का सामान फ़राहम कर रही है। नफ़्स और पेट की तस्कीन के अलावा इसके पास कोई दूसरा काम और मशग़ला नहीं है। ज़िंदगी का मक़सद सिर्फ़ यही है कि किस तरह

ज़्यादा से ज़्यादा दुनिया का माल व मताअ जमा किया जाए, किस तरह ज़खीरा–अंदोज़ी की जाए और किस तरह दुनियावी मैदान में आगे बढ़ा जाए। उनको दीन–ए–इस्लाम से कोई सरोकार नहीं, न इसके आफ़ाक़ी और हमागीर पैग़ाम से कोई ग़रज़ और वास्ता। उनका तर्ज़–ए–ज़िंदगी इस्लामी ज़िंदगी से ज़र्रा बराबर भी मेल नहीं खाता। उनके अंदर इस्लामी रूह है न ईमानी हमीयत व ग़ैरत। रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने इरशाद फ़रमाया थाः

"एक वक़्त ऐसा आएगा कि हर चारों जानिब से क़ौमें तुम पर इस तरह टूट पड़ेंगी जिस तरह भूखे खाने की प्लेट पर टूट पड़ते हैं। सहाबा ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल (स0अ0व0) क्या हमारी तादाद उस वक़्त इतनी कम होगी? रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फ़रमायाः नहीं, बल्कि तुम्हारी तादाद बहुत ज़्यादा होगी लेकिन वह सब सैलाब के ऊपर जो कूड़ा–कर्कट और झाग होता है उसके मानिंद होंगे। तुम्हारे दिलों में वहन दाख़िल हो जाएगा और तुम्हारे दुश्मनों के दिलों से रोब निकाल लिया जाएगा और यह सब दुनिया की मोहब्बत और मौत से नफ़रत करने की वजह से होगा।" (रवाहु अबूदाऊदः 4297)

आज हम मुसलमानों की हालत बिल्कुल इस हदीस शरीफ़ के मुताबिक़ है और पूरे आलम में ज़िल्लत व रुसवाई और पस्पाई का सामना है। ख़ौफ़ व दहशत और बुज़दिली हमारे रग–रग में दाख़लि हो चुकी है। अल्लाह तआला हम मुसलमानों को हमारे मुक़ाम व पैग़ाम से आशना फ़रमाए और इंसानियत के लिए कुछ करने का जज़्बा और फ़िक्र पैदा फ़रमाए। आमीन!

बेख़बर! तू जौहर–ए–आईना–ए–अय्याम है
तू ज़माने में ख़ुदा का आख़िरी पैग़ाम है

आईन-ए-जवाँ मर्दा

हज़रत मौलाना मुहम्मदुल हसनी (रह0)

"ज़िन्दगी की सारी आब–ओ–ताब, सरफ़रोशी व जांबाज़ी की ममनून एहसान है। अगर यह न हो तो इस सर्द ख़ाना को कोई ख़ारजी चीज़ गरम नहीं रख सकती। सरफ़रोशी व क़ुर्बानी का लफ़्ज़ अगर ज़िन्दगी की डिक्शनरी से निकाल दिया जाए तो वह हिसाब–किताब का खाता, या बनिया की दुकान बनकर रह जाएगी, जहां हमेशा सर छुपाने और पहलू बचाने को तरजीह दी जाएगी और मस्लहत परस्ती और आफ़ियत तल्बी ज़माने का फ़ैशन और सिक्का–ए–राएजुल वक़्त क़रार पायेगा।

यह दुनिया उसी के आगे सर झुकाने की आदी है जो सर ऊंचा करके चलने का आदी हो, उसी शख़्स की बात तवज्जो से सुनती है जो हक़ बात कहने का हौसला रखता हो, उसी के लिए रास्ता साफ़ करती है जो ख़ुद अपना रास्ता बनाने और दुश्वारियों पर क़ाबू पाने की सलाहियत रखता हो, वह उसी के लिए जांनिसार करती है जिसकी सारी ज़िन्दगी जांनिसारी और सरफ़रोशी का निशान हो, ख़िदमतगुज़ारों और फ़िदाकारों की तुन्द–ओ–तल्ख़ बातें बसरो चश्म क़ुबूल हों और आफ़ियत कोशों और मस्लहत पसंदों की ख़ुशामदाना अदाएं उसकी आंखों के लिए नागवार और उसकी नज़र में ज़लील व ख़्वार हों। यह क़ुदरत का हमेशा से दस्तूर है और दुनिया की पूरी तारीख़ इस पर गवाह है।

इस दस्तूर व क़ानून के ख़िलाफ़ किसी नये रस्ते से कामयाबी हासिल करने की कोई कोशिश हमारे लिए नतीजाखेज़ साबित न होगी, यह रेत में मुंह छिपाने या अपने आप को धोखे में रखने की एक मुज़िर शक्ल होगी और इससे ख़तरे में और इज़ाफ़ा होगा।" (ज़ाद–ओ–फ़िक्र–ओ–अमल)

बूढ़ी शहीद

मुहम्मद मुसअब नदवी बारह बन्कवी

जब मई जून की सख़्त तरीन गर्मी पड़ती है तो हम अपने पुरसुकून घरों में होते हुए भी किस तरह से बिलबिला उठते हैं और फिर अगर हमें नंगे पाँव किसी तपते हुए फर्श या रेत पर चंद लम्हों के लिए ही सही, चलना पड़ जाए तो फिर क्या हालत हो जाती है?!

उफ्फ़! जरा तसव्वुर कीजिए! सेहरा–ए–अरब की गर्मी, आसमान शोले बरसा रहा है, मक्का की रेत पूरी शिद्दत से तप रही है, चिलचिलाती धूप से सफ़ा के परिन्दे बिलबिला रहे हैं, हर सिम्त बाद–ए–समूम (गर्म हवा) के थपेड़े चल रहे हैं। ऐसे में कमजोर और लाचार, पर सब्र और इस्तिकामत की पैकर एक बूढ़ी औरत मक्का की तपती हुई रेत पर बेबस सी खड़ी है। उसके नाजुक बदन पर लोहे की जिरह का बोझ डाल दिया गया है जो मुसलसल धूप की तेजी से अंगारा बनकर उसके जिस्म को दाग रही है। पाँव में छाले पड़ रहे हैं मगर मजाल है कि वो "उफ़्फ़" भी करे। पहाड़ की तरह अपनी जगह जमी हुई खड़ी है। चारों तरफ मक्का के चंद बदबख़्त सरदार खड़े उस औरत पर ठहाके लगा रहे हैं। संगदिलों की तरफ से ये फरमान जारी होता है कि...

"ए बूढ़ी औरत!

इस कलमे से इन्कार कर दे जिसके लिए इतनी तकलीफ बर्दाश्त कर रही है, वरना तेरा सारा दिन ऐसे ही गुजरेगा।"

"सुन बूढ़िया!

जिस दीन का नशा तूने अपने ऊपर चढ़ा रखा है, देख! उस दीन से बाज़ आ जा! नहीं तो हम तुझे ऐसे ही हलाक कर देंगे।"

बूढ़ी औरत दिल ही दिल में मुस्कुराती हुई कहती है कि कलिमा–ए–हक़ का नशा जब जबान से होकर दिल की गहराइयों में उतर जाता है तो फिर कहाँ उतर सकता है। फिर तो सख़्त से सख़्त आजमाइश भी राह–ए–हक़ से नहीं हटा सकती।

इतने में वो एक मोहब्बत–आमेज, भर्राई हुई आवाज सुनती है...

"सुमैया! सब्र करो, तुम्हारे लिए ख़ुदा ने जन्नत तैयार कर रखी है।"

यह आवाज किसकी है? हाँ! ये आवाज महबूब–ए–ख़ुदा रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की है जो उधर से गुजर रहे थे। हाय! यह सारा मंजर देखकर रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के दिल पर क्या गुजरी होगी?!

सुमैया आपकी तरफ़ निगाह उठाकर देखती हैं और सारे दर्द–ओ–गम भूल जाती हैं। सुमैया के बेचैन दिल को क़रार सा आ जाता है। सूरज अब शाम की दुल्हन को मेंहदी लगा रहा है, रात अपना पुरसुकून दामन फैलाने को तैयार है। सुमैया को इस अज़ीयत से छुटकारा मिलता है। घर आते ही वह अपने रब के हुज़ूर खड़ी होकर अपने प्यारे रब से सब्र और इस्तिक़ामत की भीख माँग रही है और उससे अपना ताल्लुक़ मजबूत कर रही है।

पर जल्द ही रात अपना पुरसुकून दामन समेट लेती है। सूरज चढ़ते ही एक बार फिर से कमज़ोर सुमैया को जिरह में जकड़कर तपती हुई रेत पर संगदिल काफ़िर ला खड़ा करते हैं। इसी तरह एक अरसे तक सुमैया को जुल्म–ओ–सितम की चक्की में पीसा जाता है और यह नाजुक जिस्म वाली औरत दीन–ए–हक़ की ख़ातिर सब कुछ खुशी–खुशी सहती रहती है।

लेकिन अब काफिर मारे गुस्से के आपे से बाहर हैं कि इतनी कमजोर जान पर इतने डरावने जुल्म ढाने के बाद भी उसे उसके रास्ते से न हटा सके। उसके क़दमों में जरा बराबर भी लग़्ज़िश न आई। अबू जहल तो मारे गुस्से के दीवाना–वार गालियाँ बकता हुआ मक्का की गलियों में टहल रहा है। फिर भी जब उसके दिल की भड़ास न निकली तो वो रात होते ही हजरत सुमैया के घर में घुस गया और बक–बक करता हुआ पूरी ताक़त से दोनों रानों के बीच बरछा मार दिया कि कमजोर सुमैया उस हमले की ताब न ला सकी और उनकी रूह

जिस्म से आजाद होकर अपने करीम रब से जा मिली। लिखने वालों ने लिख लिया कि इस्लाम की ख़ातिर, दीन–ए–हक़ की राह में सबसे पहली शहादत एक औरत; यानी हजरत सुमैया (रज़ियल्लाहु अन्हा) को नसीब हुई।

जब हजरत सुमैया के बेटे अम्मार को इसकी ख़बर मिली तो वो गिरते–पड़ते रसूलुल्लाह (स0अ0व0) के पास पहुँचे। "या रसूलल्लाह! अब तो हद हो गई, कुव्वत–ए–बर्दाश्त जवाब दे रही है।"

"अम्मार! सब्र करो!" रसूलुल्लाह (स0अ0व0) की आवाज भर्रा गई। आपने दुआ की, "ऐ ख़ुदा! आल–ए–यासिर की जहन्नम की आग से हिफ़ाज़त फरमा।"

उफ़्फ़! किस तरह से अम्मार ने सब्र किया होगा! यक़ीनन ख़ुदा के नेक बंदे बहुत आजमाए जाते हैं और आजमाइशों से गुजर कर ही कुर्ब–ए–इलाही नसीब होता है; और ये बड़ी सआदत की बात है। फिर जब जंग–ए–बदर में अबू जहल मारा गया तो रसूलुल्लाह (स0अ0व0) ने फरमाया:

"अम्मार! आज ख़ुदा ने तुम्हारी अम्मी के क़ातिल से बदला ले लिया।"

बिलाशुब्हा ऐसे ईमान–अफरोज वाक़्यात में बहुत कुछ इबरत और नसीहत का सामान है।

ऐ काश! कि कोई इससे नसीहत हासिल करे।

मुसलमान हरगिज़ मायूसी का शिकार न हों!

मौलाना अज़ीज़ुल हसन सिद्दीक़ी (रह0)

"हम मुसलमानों से साफ़ लफ़्ज़ों में कहना चाहते हैं कि हालात चाहे कितने ही ख़राब हों, उन पर शक–शुब्हा किया जा रहा हो, उन्हें देशद्रोही ठहराया जा रहा हो, उनके नवजवानों को घरों से, दुकानों से और चौराहों से उठाया जा रहा हो, उनके साथ क़दम–क़दम पर इम्तियाज़ बरता जा रहा हो, मगर वह बद्दिल और मायूस होकर बैठे न रहें बल्कि अपनी सलाहियतों और तामीरी सरगर्मियों में इज़ाफ़ा कर दें। जब किसी मरीज़ पर हिज़यानी दौरे पर रहे होते हैं या सरसामी कैफ़ियत तारी होती है तो इलाज करने वाले और तीमारदार मायूस होकर नहीं बैठ जाते बल्कि और मुस्तैद होकर इलाज करते हैं। एक मशहूर मिसाल है कि "यानि मुसीबत हमेशा कमज़ोर और ज़ईफ़ पर आती है।" अगर मुसलमान कमज़ोर हैं तो उन पर मुसीबतें ज़रूर आएंगी, लेकिन उनको समझना चाहिए कि वतन–ए–अज़ीज़ में उन्हीं पर मुसीबतें नहीं आ रही हैं और भी बहुत से तबके हैं जिनके साथ भेदभाव किया जा रहा है, सताया और मारा जा रहा है। हम तफ़सील में नहीं जाना चाहते बल्कि कहना यह चाहते हैं कि कश्ती जब मंझधार में पड़ जाए तो दरिया में छलांग लगाने के बजाय हिकमत–ओ–दानाई के साथ उससे निकलने की फ़िक्र करनी चाहिए और दूसरों को शरीके ग़म बना लेना चाहिए। उन्हें इस बात का भी एहसास होना चाहिए कि बहुत से लोग हैं जो हक़ व इन्साफ़ की लड़ाई में उनके साथ खड़े हैं। हिन्दुस्तानी अवाम को समझाने की ज़रूरत है कि फ़िरक़ा परस्त, अलगाव पसंद और कट्टरवादी तत्व इस देश के दुश्मन हैं। जिस दिन उनकी समझ में यह बात आ जाएगी, वही दिन हिन्दुस्तान की आज़ादी और निजात का पहला दिन होगा। अंग्रेज़ों की गुलामी से तो हम १९४७ई0 में आज़ाद हो गए थे मगर ज़ात–पात, ऊंच–नीच, भेदभाव, साम्प्रदायिकता और अंधविश्वास से अभी तक निजात हासिल नहीं कर सके हैं।"

(मज़ामीने अज़ीज़: ६९–७०)

ख़ातमुन्नबीयीन (स०अ०व०):
नुबूव्वत की आख़िरी शमा और अब्दी पैग़ाम

सैय्यद सैफ़ुद्दीन लखनवी

अल्लाह तबारक व तआला का इरशाद है:

"मुहम्मद (स0अ0व0) तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि वे अल्लाह के रसूल और नबियों पर मुहर हैं, और अल्लाह हर चीज़ से खूब वाक़िफ़ है।" (सूरह अहज़ाबः 40)

यह मज़मून उस अज़ीम तरीन हस्ती के बारे में है जिन्हें रब्बे ज़ुलजलाल ने "ख़ातमुन्नबीयीन" क़रार दिया, वह नूर–ए–रिसालत जिनसे नुबूव्वत का सिलसिला मुकम्मल हुआ और ख़ुदा के बन्दों तक हमेशा–हमेश का पैग़ाम पहुँचाया गया।

इस आयत–ए–मुबारका के ज़रिए रब्बे तआला ने बुलन्द आवाज़ में ऐलान फ़रमा दिया कि हज़रत मुहम्मद (स0अ0व0) नुबूव्वत की आख़िरी शमा हैं, जिनके बाद रिसालत का दरवाज़ा हमेशा के लिए बन्द कर दिया गया। आप (स0अ0व0) ही अल्लाह के वो बरगुज़ीदा बन्दे हैं जिनकी इताअत, मोहब्बत और पैरवी हर मुसलमान पर लाज़िम है।

रसूल–ए–अकरम (स0अ0व0) ने फ़रमाया:

(यानी अब नबूवत और रिसालत का इनक़िता अमल में आ चुका है, मेरे बाद न कोई रसूल है न नबी) (सुनन तिर्मिज़ीरू 2279)

इसी तरह एक और मुक़ाम पर फ़रमाया:

"मेरे बाद तीस दज्जाल और कज़्ज़ाब पैदा होंगे, हर एक गुमान करेगा कि वह नबी है, हालाँकि मैं ख़ातमुन्नबीयीन हूँ और मेरे बाद कोई नबी नहीं।" (सुनन अबू दाऊदः 3908)

आप (स0अ0व0) की ज़ात सरापा रहमत, मोहब्बत और इख़्लास है। क़यामत तक कोई इन्सान अगर आप (स0अ0व0) के बाद नबी या रसूल बनने का दावा करे तो वह झूठा है। इसी वहदते रिसालत में उम्मत की अज़मत छुपी है।

हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) फ़रमाते हैं कि "हजूर (स0अ0व0) के दोनों कंधों के दरम्यान मोहर–ए–नुबूव्वत थी, आपही सिलसिला–ए–नबूवत की आख़िरी कड़ी हैं।" (सुनन तिर्मिज़ीः 3638)

ख़ातमुन्नबीयीन (स0अ0व0) से मोहब्बत हर मुसलमान के ईमान की बुनियाद है। आप (स0अ0व0) रब्बे तआला की रहमत–ए–आम्मा के मज़हर, पैग़ाम–ए–वहदत और इज़्ज़त–ए–इन्सानियत के अलमबरदार हैं। हर आशिक़–ए–मुस्तफ़ा (स0अ0व0) की आरज़ू यही है कि आप (स0अ0व0) के नक़्शे क़दम पर चले, सचाई और इख़्लास की रोशनी फैलाए और पैग़ाम–ए–ख़त्म–ए–नुबूव्वत की पासदारी करे।

ख़ातमुन्नबीयीन की रिसालत तमाम इन्सानियत के लिए अब्दी चिराग़ है। इस बारगाह से जो रोशनी मिली उसने दिलों के अंधेरे मिटा दिए। हर दौर के इन्सान के लिए उम्मीद, मोहब्बत और रुश्द व हिदायत की ज़मानत बनी। रसूल–ए–ख़ुदा (स0अ0व0) की हैसियत सिर्फ़ एक शख़्स की नहीं बल्कि पूरी उम्मत की रहनुमाई के लिए है।

आप (स0अ0व0) की तालीमात, सुन्नत और एहकाम से हर दौर में मुसलमान अपनी ज़िन्दगियों को मुनव्वर करता रहा है। ख़त्म–ए–नुबूव्वत हमें बताती है कि अल्लाह ने अपने बन्दों की रहनुमाई के लिए जो सबसे कामिल और आख़िरी हादी भेजा, वह मोहम्मद मुस्तफ़ा (स0अ0व0) हैं जो क़यामत तक तमाम इन्सानों के लिए रोशनी का मीनार हैं।

मोहब्बत–ए–रसूल (स0अ0व0) ऐसी शुआअ (किरण) है जो दिलों को पाकीज़ा बनाती है और इन्सान को हर बुराई से बचाती है। आप (स0अ0व0) से मोहब्बत में तमाम क़ुर्बानियाँ नेक और मक़बूल होती हैं, चाहे वह ज़बान से दुरूद व सलाम कहना हो या अपने किरदार को आप (स0अ0व0) की सीरत के मुताबिक़ ढालना, हर अमल मोहब्बत–ए–ख़त्म–ए–नबूवत की दलील है।

हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वह अक़ीदा–ए–ख़त्म–ए–नुबूव्वत की हिफ़ाज़त करे और उसे मजरूह करने वालों के ख़िलाफ़ इल्म–ए–बग़ावत बुलन्द करे। यह अक़ीदा न सिर्फ़ ईमान का हिस्सा है बल्कि उम्मत के इत्तिहाद और सलामती की बुनियाद भी है। इसी पर इस्तिक़ामत की वजह से ही इस्लाम आज दुनिया में जीता–जागता दीन है।

आप (स0अ0व0) की सीरत ऐसी है जो तमाम इन्सानियत के लिए रहमत, हिदायत, उख़ुव्वत और आला अख़्लाक़ का सरचश्मा है। आपने न सिर्फ़ इबादात व अख़लाक़ की बेहतरीन तालीम दी बल्कि ज़ुल्म व जौर, जहालत और शिर्क के अंधेरों को रोशन कर के इन्सानों को एक नई ज़िन्दगी दी।

आप (स0अ0व0) की ज़िन्दगी की हर तफ़सील हमें अम्न, मोहब्बत, क़ुर्बानी और अद्ल का दर्स देती है। हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0अ0व0) की ज़ात, अख़्लाक़ और सीरत–ए–तय्यिबा की रोशनी में हमें अपने किरदार को सँवारना चाहिए ताकि हम उनके हक़ीक़ी मुरीद बन सकें।

आप (स0अ0व0) की पाकीज़ा ज़िन्दगी का हर पहलू हमारे लिए मशअल–ए–राह है, और हमें चाहिए कि उनकी तालीमात को समझ कर अपनी ज़िन्दगियों में अपनाएँ।

अल्लाह तआला से दुआ है कि हमें अक़ीदा–ए–ख़त्म–ए–नबूवत पर साबित क़दम रखे और हमें नबी करीम (स0अ0व0) की मोहब्बत और फ़रमाँबरदारी की दौलत अता फ़रमाए ताकि हम इस अज़ीम पैग़ाम को पूरी दुनिया तक पहुँचा सकें।

मज़हबे इस्लाम की इम्तियाज़ी ख़ुसूसियत

मौलाना अब्दुर्रहमान नगरामी नदवी (रह0)

"दुनिया के तमाम बड़े–बड़े मज़हबों ने अपनी कामिल नशो–नुमा जब ही पाई है जब वह मारिफ़त–ओ–रूहानियत की आग़ोश से निकलकर सल्तनत और हुकूमत की गोद में चले गए हैं। मसीही मज़हब की तरक़्क़ी रूमी बादशाहों की एहसानमन्द है। बौद्धों ने बहुत कुछ तब्लीग़ की लेकिन उसका आलमगीर मज़हब भी उसी वक़्त अपनी तकमील कर सका जब वह अशोक ख़ानदान की सरपरस्ती में आ गया। लेकिन इस्लाम अपनी तारीख़ से बिल्कुल अलग है। वह जिन–जिन मुल्कों में गया और जिन–जिन जमाअतों में फैला, अख़्लाक़–ओ–रूहानियत से गया। ग़रीबे तलवार, इस्लाम में रूहानियत और मज़हब के दाख़िले के बाद गई। अफ़्रीक़ा और हिन्दुस्तान की नज़ीरें इस बारे में बहुत साफ़ हैं। इस ख़ास नेमते तब्लीग़ को भी नामे मुबारक में भी ज़ाहिर कर दिया गया है:

{فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُواْ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ}

बज़ाहिर असबाब उन मफ़ासिद के मिटने की कोई सूरत नहीं होती, लेकिन फ़ितरत की तदबीरें अन्दर–अन्दर जारी रहती हैं और एक तय वक़्त पर ज़ाहिर हो जाती हैं। फ़ितरत की रफ़्तार हवा की तरह तेज़ और सैलाब की तरह नर्म होती है। ख़ुश तदबीरी और हुस्ने उस्लूब के मौक़े पर भी हम्द का लफ़्ज़ इस्तेमाल किया जाता है। पस लफ़्ज़े "मुहम्मद (स0अ0व0)" के एक यह भी माने क़रार दिये जा सकते हैं कि वह जिसके साथ ख़ुश तदबीरी ने तरक़्क़ी की। आप (स0अ0व0) की तालीम का इन्तिशार, आपका लाय हुआ दीन, ख़ुदा की ख़ास मर्ज़ी और ख़ास तदबीर से आलम में फैल गया जिसकी सरअत और बग़ैर जद्दोजहद रफ़्तार तरक़्क़ी से इस वक़्त भी दुनिया मुतहीर है।" (ज़िक्रे मुबारक: २३–२४)

सीरत-ए-नबवी (स०अ०व०)
में समाजी पहलू के चन्द नमूने

मोहम्मद नज्मुद्दीन नदवी

मुआशरे की दरुस्त खुतूत पर तश्कील के तईं नौ–ए–इन्सानी का आफ़ाक़ी इक़दार और सालेह फ़िक्र व फ़लसफ़ा की मारिफ़त व आगाही जिस क़दर नागुज़ीर है, उस से कम ज़रूरी 'अस्री तक़ाज़ों का इद्राक़ और दरुस्त हिकमत–ए–अमली की तश्कील नहीं है। इस्लाम के आफ़ाक़ी उसूल और नबवी फ़िक्र व फ़लसफ़ा के निज़ाम–ए–फ़िक्र व नज़र को सामने रख कर समाजी पहलू के जवाहिर पारों को चुन–चुन कर जमा किया जाए और देखा जाए तो पूरा एक सालेह निज़ाम–ए–फ़िक्र व अमल निखरता हुआ नज़र आएगा। इसके लिए हमारे सामने दो मआख़िज़ क़ुरआन पाक और अहादीस–ए–मुबारका की शक्ल में मौजूद हैं। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अक़्वाल व अफ़आल और तक़रीर की शक्ल में जो ज़खीरा महफ़ूज़ और मुदव्वन मौजूद है, दरअस्ल यह क़ुरआन पाक की शरह व तफ़्सीर है और अल्लाह तआला ने एक दूसरा चलता फिरता नमूना–ए–अख़लाक़ व किरदार अता फ़रमाया है और वह ज़ात–ए–अक्दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हैं। एक सवाल के जवाब में हज़रत आयशा (रज़ियल्लाहु अन्हा) फ़रमाती हैं कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अख़्लाक़ व किरदार के बारे में दरयाफ़्त करते हो? हक़ीक़त तो यह है कि हज़ूर–ए–अक्दस (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के अख़्लाक़ तो सरापा क़ुरआन थे।

क़ुरआन पाक में अल्लाह तआला ने नौ–ए–इन्सानी के लिए एक लाज़वाल क़ानून अता करते हुए फ़रमाया है: "बिला–शक तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह की ज़ात में एक बेहतरीन नमूना मौजूद है, हर उस शख़्स के लिए जो अल्लाह और रोज़–ए–आख़िरत की उम्मीद रखता हो और अल्लाह का बहुत ज़िक्र करता हो।" (अहज़ाब: 21)

सूरह अहज़ाब की इस आयत–ए–करीमा में अल्लाह तआला ने रसूल–ए–अक़्रम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की पाकीज़ा ज़िंदगी और हयात–ए–जावेद को उस्वा व नमूना क़रार दिया है। यह उस्वा किसी मख़सूस तबक़े तक महदूद नहीं बल्कि पूरी नौ–ए–इन्सानी के लिए आला व बेहतरीन नमूना है।

अल्लाह तआला ने इन्सानियत की तकमील की ख़ातिर अम्बिया और रसूलों की बेअसत फ़रमाई। अल्लाह के इन फरस्तादों की ज़िंदगियों और सीरतों से ही इन्सानियत की तकमील हो सकती है। इसलिए हर ज़माने में उस अह्द के नबी को उस्वा व नमूना बनाया गया, मगर हर नबी और रसूल की आमद से यह साबित होता कि वह महदूद ज़माना और मुतअय्यन क़ौमों के लिए थे। इस सुनहरे सिलसिले की आख़िरी कड़ी रसूल–ए–अक़्रम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़ात व सिफ़ात हैं। इसलिए ख़ातमुर–रसूल की तालीमात दाईमी वजूद की हामिल हैं और आप (अलैहिस्सलाम) की ज़ात–ए–कुदसी–सिफ़ात को मजमूआ–ए–कमाल बना कर नौ–ए–इन्सानी के लिए नमूना–ए–अमल और क़ाबिल–ए–तक़लीद उस्वा क़रार दिया गया। क्योंकि हज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बेअसत दाईमी और आफ़ाक़ी है, इसलिए ज़मान व मकान के इन्क़िलाबात और हवादिस–ए–दहर के बावजूद सदा–बहार और ज़िंदा–जावेद है। हज़ूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की ज़िंदगी को दवाम और बक़ा मिली है।

किसी शख़्सियत को क़ाबिल–ए–तक़लीद उस्वा व नमूना क़रार देने के लिए कुछ शर्तें लाज़िम हैं। मौलाना सैय्यद सुलेमान नदवी (रह0) ने बताया है कि जिस चीज़ की ज़रूरत दाईमी व बाकी होती है, इन्क़िलाबात व हवादिस के बावजूद बरक़रार रहती है और कभी उस पर ज़वाल नहीं आता; लिहाज़ा दुनिया की कोई शख़्सियत उसी वक़्त उस्वा व नमूना बन सकती है जब उसमें चार तरह की शर्तें पाई जाती हों: (1) तारीख़ियत (2)

जामिईयत (3) कामिलियत और (4) अमलियत।

पहली और औवलीन शर्त तारीख़यित का पहलू है कि वह शख़्सियत तारीखी लिहाज़ से पेश–करदा अहवाल, तारीख़ व रिवायत की रौ से सेहत व इस्तिनाद के आला मेयार पर पूरी उतरे। दूसरी शर्त जामिअियत है कि तमाम तबक़ा–ए–इन्सानी को उस शख़्सियत ने रहनुमाइयाँ पेश की हों। तीसरी शर्त कामिलियत है कि उस शख़्सियत की पूरी ज़िंदगी का हर एक लम्हा पैदाइश से लेकर वफ़ात तक लोगों के सामने हो, ज़िंदगी का कोई एक ऐसा गोशा मुख़्तसर ज़माने के लिए भी न गुज़रा हो कि नज़रों से ओझल रहा हो और आख़िरी शर्त अमलियत यानी अमली पहलू है कि उस शख़्सियत ने सिर्फ़ अच्छाई की तलक़ीन व तरग़ीब न दी हो बल्कि उसे सबसे पहले बरत कर दिखाया हो।

नौ–ए–बशर में से किसी भी शख़्सियत को उस्वा व नमूना बनाने के लिए इन अरकान–ए–अर्बा की कसौटी पर जांच–परख करनी होगी। अगर कोई शर्त फ़ौत होती है तो वह शख़्सियत उस्वा व नमूना बन नहीं सकती। अगर इन तहरीर की हुई शर्तों पर पूरी नौ–ए इन्सानी की तारीख़ का अद्ल व इनसाफ़ से जायज़ा लिया जाए तो इस पर तन्हा शख़्सियत सिवाए आख़िरी नबी व रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) के कोई और नज़र नहीं आती। क्योंकि इनमें यह चारों शर्तें पूरी पूरी पाई जाती हैं। यही वह बुनियादी व हत्मी वजह है कि आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की शख़्सियत को दुनिया के आख़िरी दिन तक के लिए नमूना क़रार दिया गया और फ़िक्री व नज़री दुश्मनी और अमली बग़ावत करने वालों के लिए आम चुनौती भी दी गई:

"जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को अज़ियत पहुँचाते हैं, उन पर दुनिया व आख़िरत में अल्लाह ने लानत की है और उनके लिए ज़िल्लत का अज़ाब तैयार कर रखा है।" (अहज़ाब: 57)

और जिस नबी की अहमतरीन खुसूसियत यह है:

"तुम्हारे पास तुम में से एक रसूल आया जिस पर तुम्हारी तकलीफ़ बहुत ग़रां गुज़रती है, तुम्हारी भलाई का हरीस और मोमिनों पर बहुत शफ़क़त वाला और मेहरबान है।" (तौबा: 128)

जिसकी बशारत अह्द–ए–गुज़िश्ता के जुमला अम्बिया देते आए हैं, अगली आसमानी किताबों और सहीफ़ों में वाज़ेह निशानात और माबह–अल–इम्तियाज़ ख़साइस के तज़किरें हैं। उलमा–ए–यहूद व नसारा ने तस्दीक़ व ताईद तक की है, सब से बढ़ कर दुआ–ए–ख़लील व नवीद–ए–मसीह है। उन्होंने इन्सानी तारीख़ की मुख़्तसर तरीन तेईस साल की मुद्दत में समाजी व मआशरती इनक़िलाब ला कर पूरी दुनिया को अम्न व सकून का गहवारा और एक मिसाली मआशरा का नमूना पेश कर दिया और इस का क़ीमती सरमाया आज बिला किसी शक के महफ़ूज़ व मौजूद है और हजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का अमली किरदार व नमूना सहाबा–ए–किराम (रज़ियल्लाहु अन्हुम) की पूरी जमाअत भी है।

मुआशरती व समाजी ज़िंदगी में हमें रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) की बहुत ज़्यादा हिदायतें व इरशादात ज़ख़ीरा–ए–अहादीस में जा–बजा मिलते हैं। मुआशरे की तश्कील व तनवीर खानदान से होती है और यह खानदान एक मर्द व ख़ातून की तर्कीब से वजूद पाता है। इसके बुनियादी अज़ा में ज़न व शौहर, मादर व पिदर और औलाद से वजूद पाकर अज़ीज़ व अकरबा और हमसाया व मेहमान से गुज़र कर आम कलिमा–गो और आम इन्सान तक इसका दायरा फैला हुआ नज़र आता है। मुआशरे के इन तमाम अफ़राद व अजा के लिए वही–ए–इलाही के पहलू बह पहलू नमूदार नबवी अरशादात व हिदायतें मौजूद हैं और अमल व किरदार के नमूने ने इन सब की रहनुमाई व हिदायत फ़रमाई है। इस तरह दीन के तमाम पहलू रोज़–ए–रोशन की मिस्ल अयाँ व वहीद हैं। रसूल–ए–अक़रम (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया: (मैंने तुम्हें एक ऐसी रौशन राह पर छोड़ा है कि उसकी रात भी उसके दिन की तरह रौशन व ताबां है।)

मुआशरती व समाजी ज़िंदगी में दो पहलू हैं: एक क़ानूनी हैसियत से और दूसरा अख़लाक़ी लिहाज़ से। दोनों पहलुओं में कामिल व बेहतरीन किरदार व नमूने ने अख़्लाक़ी खूबियों से भरपूर मिसाली मुआशरे की तनवीर बख़्शी है। एक अच्छे मुआशरे की खूबी यह होती है कि उसमें अद्ल व इन्साफ़ की बालादस्ती हो, बराबरी और मुसावात का बर्ताव हो।

"तुमसे पहले क़ौमें इसीलिए हलाक व बर्बाद हुईं कि जब उनमें कोई मामूली आदमी गुनाह करता तो उसको सज़ा दी जाती और बड़े लोग गुनाह करते तो उनको नज़रअन्दाज़ कर दिया जाता था।"

मज़लूमों और बेकसों का सहारा और हाजतमन्दों की मदद व इआनत हुज़ूर (स0अ0व0) की सीरते तैय्यबा का एक नुमाया गोशा है। मक्की—मदनी ज़िन्दगी में बेशुमार मौक़े ऐसे आए कि उसमें सुलूक और बर्ताव अच्छा फ़रमाया। मक्की ज़िन्दगी में नुबूव्वत से सरफ़राज़ी से क़ब्ल एक अहम और तारीख़ी मुआहिदा मक्के मुकर्रमा की अर्जे पाक में हुआ था, हुज़ूर (अलैहिस्सलाम) खुद मुआहिदे में शरीक रहे और उसकी बुनियाद इस पर थी कि किसी पर ज़ुल्म को रवा नहीं रखा जाएगा और मज़लूम की मदद की जाएगी, जिसे तारीख़ में हिल्फ़ुल फ़ुज़ूल का नाम दिया है। ज़ुल्म व ज़्यादती के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाना, मेहनत व मशक़्क़त करना और मज़लूम व सताए हुए को हक़ दिलाना इस क़द्र पसंद था कि एक बार मदनी ज़िन्दगी में भी फ़रमाया कि अगर आज भी मुझे हिल्फ़ुल फ़ुज़ूल के लिए बुलाया जाए तो मैं उसे क़ुबूल करने के लिए तैयार हूं।

जम्हूरिया—ए—हिन्द में आए दिन के अख़्बार और दूसरी मीडिया रिपोर्टों के ज़रिये सुनते और देखते हैं कि यहां किसी की दिलआज़ारी है तो वहां किसी की किरदारकुशी होती है। मुसलमान अपने वतन में अब त कवह मक़ाम नहीं पा सका जिसका हक़ रखता था और कोशिश की जा रही है कि उनको बुज़दिल, निकम्मा और आइन्दा के हवाले से मायूस कर दिया जाए। इसीलिए ज़रूरी है कि मुसलमान ख़्वाबे ग़फ़लत से बेदार हों और अपने को पहचाने और अपनी ज़िम्मेदारी के एहसास व इदराक के साथ ख़ैरे उम्मत बनकर जीने का अज़्म करें। बाहौसला व बाहिम्मत और बाशऊर बनकर जिएं। क़ुरआन का यह पैग़ाम सुनाया जाए कि:

"और कमज़ोर मत पड़ो न ग़म खाओ, अगर तुम ईमान वाले हो तो सरबुलन्द तुम्ही रहोगे।" (आले इमरानः 139)

हुज़्न—ओ—मलाल व एहसासे कमतरी और मायूसी के दलदल से निकलने वालों को फिर वही—ए—इलाही की आयते मुज़्दा सुनाई जाए जिसमें पयामे सरमदी छिपा हुआ हैः "यक़ीनन जिन्होंने इक़रार किया कि हमारा रब अल्लाह है, फिर वह जमे रहे तो उनपर न ख़ौफ़ होगा और न ग़मगीन होंगे।" (सूरह अहक़ाफ़ः 13)

मुहास्बे की ज़रूरत

हज़रत मौलाना जाफ़र मसऊद हसनी नदवी (रह0)

"हमारे नबी (स0अ0व0) ने उम्मत को जो रास्ता दिखाया और उसके लिए जो हिदायत नामा जारी फ़रमाया, उम्मती होने के दावेदार हममें से कितने लोग हैं जो इस हिदायत नामें की रोशनी में अपनी ज़िन्दगियां गुज़ारते हैं? आक़ा—ए—दो आलम (स0अ0व0) की शान में गुस्ताख़ी पर ग़म—ओ—गुस्से का इज़्हार बजाय बल्कि ग़ैरत, ख़ुद्दारी और इश्के़ नबवी का लाज़मी तक़ाज़ा है, अगर हमारे दिलों में हुज़ूरे पाक (स0अ0व0) की मुहब्बत और जांनिसारी का जज़्बा नहीं तो फिर हमारा ईमान भी सलामत नहीं, क्योंकि आप (स0अ0व0) का इरशाद हैः "तुममें से कोई उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके मां—बाप, औलाद और आम लोगों से ज़्यादा महबूब न हो जाऊं।" लेकिन अगर हुक्म उदूली करके ज़ाते रिसालत की तौहीन का मुरतकिब ख़ुद हुआ जाए, आप (स0अ0व0) के लाए हुए क़ानून की ख़िलाफ़ वर्ज़ी करके बाग़ियों की सफ़ में ख़ुद शामिल हुआ जाए तो गुस्सा किस पर उतरना चाहिए और नाराज़गी किसके ख़िलाफ़ होनी चाहिए?" (दावत—ए—फ़िक्र—ओ—अमल)

ताक़त का नशा

मुहम्मद अरमग़ान बदायूनी नदवी

नशावर चीज़ें हर समाज में नापसंदीदा हैं, नशा का अंजाम बहुत ख़राब है और नशे का चस्का इंतिहाई ख़तरनाक! खाने–पीने वाली चीज़ों का नशा हड्डियाँ गलाता है, गंभीर बीमारियाँ बनाता है, दिमाग को मफलूज करता है, पेट को तबाह करता है, आसाब को मुतास्सिर करता है, जिस्म में ज़हरीले माद्दे फैलाता है और बिलआख़िर नई नस्ल को ज़ेहन व फ़िक्र से आरी और सेहत व तवानाई में मुफलिस बनाकर ख़ानदान उजाड़ देता है और घर–बार तबाह कर देता है।

नशा ज़िन्दगी की ज़िद है और बर्बादी की पहली मंज़िल, ज़िन्दगी परवाज़ चाहती है और नशा तनज़्ज़ुली, ज़िन्दगी हमसाए चाहती है और नशा बेगाने, ज़िन्दगी तामीर चाहती है और नशा तख़रीब, ज़िन्दगी इज़्ज़त चाहती है और नशा बेइज़्ज़ती, ज़िन्दगी आला मेयार चाहती है और नशा अदना मेयार, ज़िन्दगी बुलंद अज़ाइम चाहती है और नशा फ़क़त एक कश!

दुनिया में नशे की मुख़्तलिफ़ क़िस्में और मुतअद्दिद शक्लें हैं, जिन में नशा की एक क़िस्म "ताक़त का नशा" भी है। ताक़त का नशा दुनिया के सभी नशों से ज़्यादा ख़तरनाक, मोहलिक और तबाह–कुन है। इसका फ़लसफ़ा सबसे अलग और इसके मुज़र्रात निहायत संगीन और बहुत ही गहरे हैं। इस नशा में तअद्दिया के जरासीम सभी ज़हरनाक जरासीम से ज़्यादा भयावह हैं।

ताक़त फी–नफ़्सिह शय–ए–महमूद ह। ताहम नशा हर उस चीज़ का हराम है जो इंसान के अंदर से इंसानियत का उन्सुर ही छीन ले। ताक़त का वजूद ज़ुल्म मिटाता है मगर ताक़त का नशा ज़ुल्म को फ़रोग़ देता है, ताक़त का वजूद बदउन्वानी खत्म करता है मगर ताक़त का नशा बदउन्वानी को बढ़ावा देता है, ताक़त का वजूद अम्न का निफ़ाज़ करता है मगर ताक़त का नशा बदअमनी फैलाता है, ताक़त का वजूद तहफ़्फ़ुज़ात फ़राहम करता है मगर ताक़त का नशा तहफ़्फ़ुज़ात खत्म करता है, ताक़त का वजूद तरक़्क़ी के आने–बाने बुनता है मगर ताक़त का नशा तरक़्क़ी के साँचे ही तोड़–फोड़ देता है, ताक़त का वजूद माहिरीन–ए–फ़न की दरयाफ़्त करता है मगर ताक़त का नशा चोर व डाकू पैदा करता है, ताक़त का वजूद मुल्कों को मज़बूत करता है मगर ताक़त का नशा मुल्कों की बुनियादें हिला देता है, ताक़त का वजूद भेद–भाव की सड़ांध को साफ़ करता है मगर ताक़त का नशा भेद–भाव के अनासिर को परवान चढ़ाता है, ताक़त का वजूद हुक़ूक़ दिलाता है मगर ताक़त का नशा हुक़ूक़ छीन लेता है, ताक़त का वजूद आइन का पासदार होता है मगर ताक़त का नशा आइन की धज्जियाँ उड़ाता है, ताक़त का वजूद अपने मातहतों का मुहाफ़िज़ होता है जब कि ताक़त का नशा उन्हें ज़मीन का बोझ समझता है।

ताक़त का नशा एक लाइलाज बीमारी है, जिस में अफ़कार व अक़दार और मेयार बदल जाते हैं, ज़ेहन की सोच और सोचने का ढंग तब्दील हो जाता है, बसारत पर दबीज़ पर्दे हाइल और बसीरत से महरूमी हो जाती है, इंसानी ज़मीर मर्दा और हस–ए–लताफ़त बेजान हो जाती है।

ताक़त का नशा जब सर चढ़कर बोलता है तो ज़ुल्म को इन्साफ़, सितम को करम, गाली को मरहम और मुफ़लिसी को अमीरी समझा जाता है, फिर नौजवानों का मुस्तक़बिल स्याह होता है, उनकी तरजीहात से ऐराज़ किया जाता है, उनकी ज़िन्दगी का इस्तिहसाल और उनकी ताक़त का नाजायज़ इस्तेमाल होता है, उन्हें परफ़रेब नारों में उलझा दिया जाता है, उन्हें झूटी तसल्लीओं से बहला दिया जाता है और मानिंद सराब तरक़्क़ी के सब्ज़ बाग़ात दिखाकर उन्हें मीठी नींद सुला दिया जाता है। बिला–शुब्हा ताक़त का नशा मुल्कों को तबाह कर देता है, नस्लों को बर्बाद कर देता है, तहज़ीबों को मस्ख़ और हुर्रियत–ए–राय का हक़ सल्ब कर लेता

है। ताक़त का नशा हुस्न व क़ुबह का फ़र्क़ खत्म कर देता है, अच्छे बुरे की तमीज़ मिटा देता है, इसीलिए वो ना–आहलों को खूब नवाज़ता है, उनकी जुर्रअतें बढ़ाता है, उन्हें मासूमियत के तमगे देता है, आला मनासिब पर बिठाता है जिन के ज़रिए वो अपने नापाक मनसूबे कामयाब बनाता है।

नतीजा ये होता है कि ये नशा फ़िरऔनी समराज़ को फ़रोग़ देता है, बदउन्वानी को हवा देता है, मुल्की मआशत को अबतर करता है और क़ौमों को ताराज कर देता है। ताक़त का नशा बहुत गहरा है और इसकी पॉलिसी भी हद्द दर्जा ज़हर–आगीन। जब सर–ए–आम इस नशे का तूती बोलता है तो ज़िन्दगी का हर शोबा इसके क़दमों में ढेर हो जाता है। ज़राए–ए–इब्लाग़ इसका मतीअ, महकमा–ए–अमन इसका नाज़–बरदार, महकमा–ए–तहक़ीक़ इसका इशारा–ए–अब्रू का पाबंद, महकमा–ए–इंतिख़ाबात इसके कनायों का राज़दां और महकमा–ए–अदल इसका रहीन–ए–मिन्नत हो जाता है।

ताक़त का नशा समाज के हर तबक़ा पर असरअंदाज़ होता है, जिसके असरात लोगों के किरदार व गुफ़्तार में झलकते हैं, मोअल्लिमीन का तरीक़–ए–तफ़हीम जुदा हो जाता है, अहल–ए–सियासत का लहजा करख़्तगी इख़्तियार कर लेता है, तहरीकों का एजेंडा बदल जाता है और इस नशा से मुतास्सिर आम आदमी का तर्ज़–ए–सुख़न भी ज़हर आलूद हो जाता है। ताक़त का नशा एक ग़ैर–महदूद समाजी वबा है, अगर अहल–ए–दानिश व बीनिश इसका शिकार हो जाएँ तो ये तारीख़ में तहरीफ़, निसाब–ए–तालीम में ज़हर अफ़शानी और दफ़ातर में रिश्वत–स्तानी को रवां कर देता है और अगर अरबाब–ए–हल–ओ–अक़्द इसके आदी हो जाएँ तो ये मज़लूमों पर ज़ुल्म, मासूमों पर बर्बरियत, नहतों पर डाका, शरीफ़ों से छेड़छाड़, सिन्फ़–ए–नाज़ुक की बेइज़्ज़ती और जूयान–ए–हक़ को क़त्ल की राह दिखाता है।

ताक़त का नशा मुतअद्दी और इसका नतीजा तख़रीबकारी है। ये नशा अख़लाक़ का दीवालिया कर देता है, क़ौमों की तक़दीर में ख़त–ए–गुलामी खींच देता है, मुल्कों की क़स्मित में मआशी बहरान चस्पां कर देता है, इंसानी समाज में नफ़रत की ख़ंदकें खोद देता है और पसमांदा तबक़ात की ज़िन्दगी से रोशन मुस्तक़बिल की इस्तिलाह ग़ायब कर देता है। ताक़त का नशा जज़्बा–ए–तामीर के मुनाफ़ी है, जज़्बा–ए–तामीर सालेह अफ़राद चाहता है और ताक़त का नशा फ़ासिद अफ़राद, जज़्बा–ए–तामीर उरूज चाहता है और ताक़त का नशा ज़वाल, जज़्बा–ए–तामीर अम्न चाहता है और ताक़त का नशा ख़ौफ़ व हिरास, जज़्बा–ए–तामीर तालीम–याफ़्ता समाज चाहता है और ताक़त का नशा जहालत!

हाय उस ज़ूद-ए-पशेमां का पशेमां होना

"ज़ालिम दुआ के लिए हाथ उठाता है मगर कब? जब उसका ज़ुल्म करने वाला हाथ शल हो जाता है। मग़रूर सज्दे में गिरता है मगर किस वक़्त? जब उसका सर-ए-पुर गुरूर पामाल हो जाता है। गुनाहगार शख़्स अपने लबों को तौबा व इस्तिग़फ़ार के लिए खोलता है मगर कब? जब उसकी ज़बान कलिमाते कुफ़्र निकालते-निकालते थक जाती है। नशा कूव्वत व हुकूमत से मतवाली और सरमस्त क़ौमों का भी एक रोज़ नशा-ए-ताक़त व हुक्मरानी उतर कर रहेगा। मगर यह उस वक़्त होगा जब उनकी जोर-ओ-जफ़ा, फ़िस्क़-ओ-फ़िजूर, असियां व गुनाहगारी की शब-ए-तारीक गुज़र चुकी होगी और इन्तिक़ाम-ओ-एहतिसाब की सुबह तुलू होने पर होगी। यह वह घड़ी होगी जब हसरत-ओ-नदामत, तौबा व इस्तिग़फ़ार, एतराफ़-ओ-इक़बाल, माज़रत-ओ-इन्फ़िआल बेकार हो जाएंगे और मुकम्मल इन्साफ़ बड़े से बड़े ताक़तवर मुजरिम को कैफ़र-ए-किरदार तक पहुंचा देगी। आदिले हक़ीक़ी का फ़रमान आज से नहीं सदियों से सरगुज़िश्ता ग़फ़लत-ए-दुनिया के सामने मुनादी कर रहा है: "और हमने कितनी ही आबादियों को जहां के लोग ज़ालिम थे, तहस-नहस कर डाला और उनकी जगह दूसरी क़ौमें उठाकर खड़ी कीं।"

अल्लामा सैय्यद सुलेमान नदवी (रह०) (शज़राते सुलेमानी: १२१-१२२)

सच्ची बातों को सहन करना सीखो

"मुझे सबसे बड़ा ख़तरा (जो अब ख़तरा नहीं रहा बल्कि मुशाहदा बनता जा रहा है) मुसलमानों की इन दो कमज़ोरियों या बीमारियों से है जो दिल पर पत्थर रखकर कहता हूँ कि हिन्दुस्तान का हद तक मिल्ली मिज़ाज बनता जा रहा है; एक उजलत और बेसब्री, वह यह कि मसअला कितना ही तवील–उल–मियाद, सब्र–आज़मा और पेचीदा हो, यहाँ के मुसलमान हथेली पर सरसों उगाने के क़ायल हैं। वह चाहते हैं कि जो मुहिम सुबह शुरू हुई है, वह सूरज ग़ुरूब होने से पहले कामयाब हो जाए और बेल मुंडेर चढ़ जानी चाहिए। मसाइल को कामयाबी से हल करने में एक बड़ा फ़ैक्टर सब्र–ओ–तहम्मुल, क़ुव्वत–ए–बर्दाश्त और बुलंद हौसलगी है। मुसलमानों ही की तारीख़ नहीं, तमाम ज़िन्दा और फ़ातेह क़ौमों की तारीख़ (ख़ुद सीरत–ए–नबवी (स०अ०व०) जिससे बढ़कर हमारे लिए कोई उस्वा व नमूना नहीं) तल्ख़–ओ–शिरीन, सर्द–ओ–गर्म, नशेब–ओ–फ़राज़ के मनाज़िर का मजमूआ और एक तवील, सब्र–आज़मा, ज़ह्रा–गुदाज़ जद्दो–जहद की रूदाद है। तहरीक़ात और मुहिम्मात की तारीख़ भी हमें यही सबक़ देती है। लेकिन हिन्दुस्तानी मुसलमानों का मिज़ाज इसके बरख़िलाफ़, मअरका को चुटकियों में फ़तेह कर लेने का क़ायल है।

मुसलमानों की दूसरी कमज़ोरी, जो अब एक नेशनल कैरेक्टर का रंग इख़्तियार कर गई है, वह उनके अपने क़ाइदीन के बारे में बे–एतमादी, बदगुमानी, शदीद एहतिसाब, बे–ज़रूरत तन्क़ीद और किरदारकुशी है। फिर अफ़सोस के साथ कहना पड़ता है कि बिरादरान–ए–वतन का अपने सियासी, तालीमी, तामीरी रहनुमाओं और समाजी काम करने वालों के बारे में रवैया बिलकुल मुख़्तलिफ़ है। अपने रहनुमाओं से बुलंद अख़्लाक़ी मेयार, हर शक–ओ–शुब्हे से बालातर दयानत की तवक़्क़ो, इस्लामी तालीमात और इस्लामी तसव्वुरात के ऐन मुताबिक़ है। लेकिन इस हद तक इफ़रात–ओ–ग़ुलू कि हर काम बदगुमानी से शुरू किया जाए और हर क़ाइद व ख़ादिम–ए–मिल्लत को बे–एतमादी और बे–तौक़ीरी की नज़र से देखा जाए और उस पर बड़े से बड़ा इल्ज़ाम लगाने में पस–ओ–पेश न किया जाए। उसके बारे में बअीद–अज़–क़यास से बअीद–अज़–क़यास बात को फ़ौरन बावर कर लिया जाए। अफ़वाह फैलाने और उसे मान लेने में भी ज़रा एहतियात–ओ–तअम्मुल से काम न लिया जाए, यह एक ऐसी मुहलिक बीमारी है जो पूरे शिराज़ा–ए–मिल्लत को दरहम–बरहम करने के लिए काफ़ी है। और बड़े से बड़ा शेरदिल, कोह–वक़ार और पाकबाज़ व पारसा ख़ादिम–ए–दीन और बड़े–बड़े तूफ़ानों में कश्ती–ए–मिल्लत के सर–फ़िरदे मल्लाह का दिल तोड़ देने और उसकी हिम्मत पस्त कर देने के लिए काफ़ी है। वह दुश्मनों की अज़ीयतों, क़ैद–ओ–बंद की सज़ाओं, बच्चों और अफ़राद–ए–ख़ानदान के फ़ाक़े को बर्दाश्त कर सकता है और उसकी पेशानी पर शिकन नहीं आ सकती है, लेकिन एतेहाम और इल्ज़ाम, किरदारकुशी और मिल्लत का ग़द्दार बनाए जाने से उसका दिल चूर–चूर हो जाता है, उसके हाथ–पाँव ठंडे पड़ जाते हैं। किसी ने सच कहा है कि एक बुढ़िया को हज़रत उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु) के टोकने, एक अ़रबी के सवाल पूछ लेने की रिवायतों को हमारे क़ौमी जलसों और मजालिस–ए–वअ़ज़ में ऐसे मुबालग़ा और बे–एतदाली से बयान किया गया है कि हर शख़्स ने उसकी तक़लीद शुरू कर दी है, चाहे अमीर–उल–मोमिनीन फ़ारूक़–ए–आज़म (रज़ियल्लाहु अन्हु) के मक़ाम का आदमी न हो, लेकिन पूरी क़ौम बुढ़िया और अ़रबी का किरदार अदा करना चाहती है। अक्सहरयती फ़िर्क़ा का अपने रहनुमाओं और कारकुनों के बारे में रवैया वाज़ेह तौर पर इसके बरअक्स है। अपनी दूसरी कमज़ोरियों के बावजूद, वे इस सिलसिले में नमायाँ तौर पर मुतय्यिद, फ़राख़दिल और वसीअ़–नज़र वाक़े हुए हैं।" (जोहद–ए–मुसलसल: २९१–२९४)

मुफ़क्किर–ए–इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी (रह०)

R.N.I. No.
UPHIN/2009/30527

Monthly
ARAFAT KIRAN
Raebareli

Issue: 10 ❊ October 2025 ❊ Volume: 17

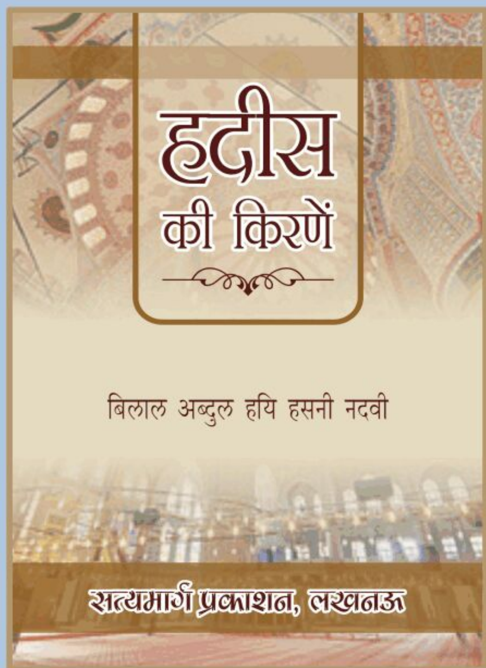

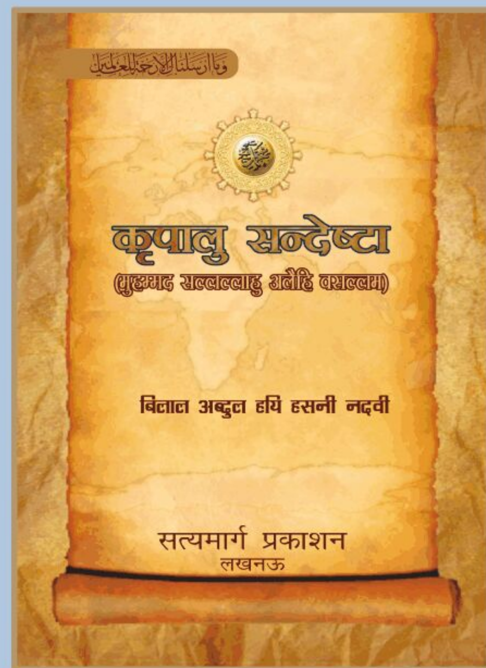

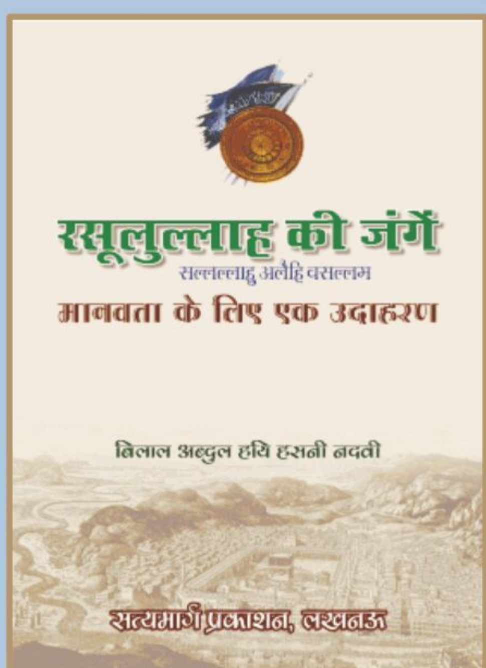

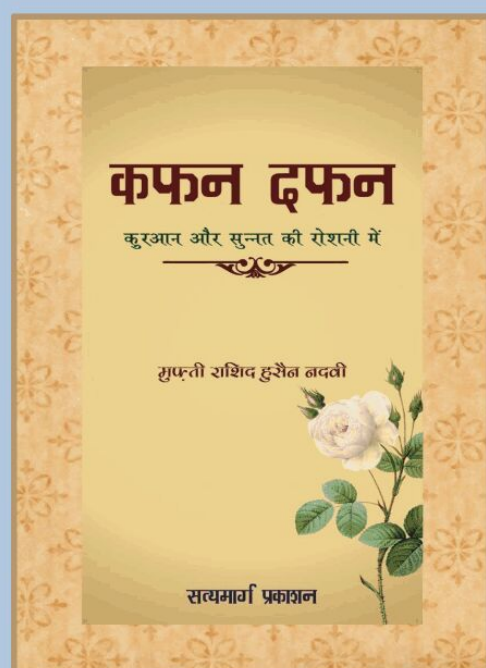

Editor: Bilal Abdul Hai Hasani Nadwi

MARKAZUL IMAM ABIL HASAN AL-NADWI

Dare Arafat, Takiya Kalan, Raebareli, U.P.
Mobile:9565271812
E-Mail: markazulimam@gmail.com
www.abulhasanalinadwi.org

Printed & Published by: Mohammad Hasan Nadwi
On Behalf of: Markazul Imam Abil Hasan Al-Nadwi
Printed at S.A. Offset Printers, Masjid ke peeche,Phatak Abdullah Khan, Sabzi Mandi, Station Road, Raebareli, U.P.